कृति : **पोशपुत** (The Adoptive Son)

लेखक : सन्तोष कुमार मिश्र

सानेपा -३, ललितपुर

पोष्ट बक्स नं. ९८९८, काठमाण्डू, नेपाल

मोबाइल : ००९७७ - ९८४१३७७५७०

E-mail : santosh_58@hotmail.com
sant_mi@yahoo.co.in

सम्पादन : कालीकान्त झा 'तृषित'

प्रकाशक : धर्मकला देबी /गुड़िया मिश्र

प्रथम संस्करण : २०६४

मुल्य : नेपालमे ने.रु. २००/-

भारतमे भा. रु. १३०/-अन्य देशमे US$ 5/-

प्रति : ३५०० प्रति

आवरण डिजाइन: श्री गंगेश गुञ्जन झा

मुद्रक : गौरीशंकर राउत (UPS)

महोतरी-३ महोतरी, नेपाल

ISBN : 978-9937-2-0100-1

हमरा जे बुझाएल

मैथिली कथा आ कथाकारक क्षेत्रमे श्री सन्तोष कुमार मिश्र नऽब नाम नहि छथि हिनक आओर बहुत कथासभ प्रकाशित भेल छन्हि । हिनक कथामे प्राय: निराशावादी वा पलायनवनदी सोंचक अधिकता रहैत आइल छन्हि । ओना त ई बात एखनो धरि ओझराएले छैक जे साहित्य स्रष्टाके एकटा तटस्थ प्रस्तोता होएबाक चाही पथ प्रदर्शक सेहो ? पलायनवादी होएबाक चाही अथवा संर्घषक प्रेरणास्रोत सेहो ? तहन एहि प्रसंगमे नहि ओझरा कथा शिल्पी सन्तोष कुमार मिश्रजीक कथा संग्रह पोसपूत मे समाबेश भेल कथा पोसपूत अछि । एहि कथामे तीन पुस्ताक बहुत रास बात आ प्रसंगके एके संगे जोरल गेल अछि साथहि बिषय प्रसंगकें सभस ब्यतीत भेल घटना सभकें कथाकार अपने समक्ष घटित भेल घटना सभकें कथाके रुपमे प्रस्तुत करैत अपनाके तकर एकटा साक्षि एवं कथाके सजिब पात्रके रुपमे प्रस्तुत कएने छथि मुदा तहुमे राजा त्रिभुवनके समयमे वा राजा महेन्द्रके समयमे भेल घटनासभके एहि कथासंगे जणेडलासं अनावश्यक रुपे लम्बा भऽगेल छैक एवं तकरा एहि कथा संगे जोडबाक अभिप्राय सेहो स्पष्ट नहि भऽरहल छैक ।

कखनो काल कल्पना स सेहो बेसी बिचित्रता लऽकऽ कठोर सच्चाइ जीवनमे उपस्थित भ जाइत छैक आ ब्यक्तिके बिवशता क अनुभूती कोन कोन रुपे करा दैत छैक तकर सजीव चित्रण 'एकटा व्यथा पत्रमे' कथा समेटने अछि । काल चक्र क गतिके निष्ठुर झंझावातक आघात स अस्त ब्यस्त की पूर्णत: ध्वस्त भेल परिवारक बिभत्स एवं हृदय विदारक परिदृश्य एवं परिवारक होनहार चिराग के मनस्थिती उजागर भेल अछि । तकरा बादक कथा 'जखन कनिञ भेलखिन बिमार'के देखला स ई कया सेहो बिमारे बुझाएल ।

समय आ परिवेश स कथाकारके नीक जकाँ जूड़ल रहैक चाही तहन ने ओ जीवन पथमे प्राप्त ओकड. पाथर, मणि मुक्ता, मोती आदीके सहेज कS कथा रुपी माला तैयार कS सकताह से ताहिमे कथा शिल्पी सन्तोष सिद्ध हस्त छथि । देश, काल आ बदलैत समाजिक मुल्य, मान्यता आ सोंचमे होइत आएल परिवर्तणक 'सिपाही' शीर्षक अएना जकाँ स्पष्ट कएने अछि । जे प्रहरी सेवामे असइ के पद पहिने गौरब आ प्रतिष्ठाक बात छलैक से नेपालक बदलैत हालात संगे ओ पद आ पदीय दायित्व वाला ब्यक्ति ग्राहय नहि भSरहल छैक । जे पद बिआह दानमे प्राथमिक्ता पबैत छलैक से एमहर आबि क सर्वथा त्याग्य श्रेणीमे पहुँचगेल छैक तकर सटीक चित्रण एहि कथामे भेल अछि ।

'डाक्टर' नाम स जे कथा समाविष्ट अछि से कथा पलायनवादी सोंचक पराकाष्ठा अछि समस्या स ग्रस्त चेलाक बाद निदानक हेतु कएल प्रयाशमे आएल बिध्न बाधा आ बिषमताक आगा घुटना टेकि लेब पुरुषर्थ नहि छैक आ नहि त मृत्यु निदान छैक । जीवनमे गति चाही उत्साह आ उर्जा चाही ओकरा प्रकाश चाही अन्धकार नहि तैं कथाक मादे पलायनवादी सोंच स कथाकार सन्तोषके सन्तोष करहि पडतन्हि । कम स कम आबक डाक्टर मरितो दम तक मरिजकें बचाबSमे लागए स तेहने कथा आ कथाक डाक्टरके जन्म होइक से प्रसब बेदना कथा शिल्पीके सहन करए पडतन्हि ।

एक तरफ भाग्यचक्रक खेल जेकर अपन हटलो विलक्षण होइत छैक । तकरे उदाहरणके रुपमे कथा 'भाग्य अप्पन-अप्पन' प्रस्तुत भेल अछि । त दोसर तरफ 'दाग' कथामे क्षणिक आवेशमे आबि उठाओल गेल डेग केहन अभिशापक रुपमे जीवन परन्ति कचोटैत रहैत छैक अर्थात ओ दाग बनिकS दगिते रहैत छैक से देखाओल गेल छैक । समाजमे प्रेम बिवाह हएब खराप बात नहि छैक खराप त छैक ओकर मर्यादा नहि राखब अपरिपक्व उम्रमे भेल प्रेम प्रेम नहि आ न बिचलन छैक भटकाब छैक एहि कथाक रानी पथभ्रष्टताक प्रतिक छथि किएक त प्रथम त प्रेम बिवाह ककरो स कएलन्हि आ तकराबाद दोसरे संगे भागि गेलीह । इएह सभ कर्म आ कुकर्मके छुटिअबैत छैक । खैर, हुनका संगे हम ई सभ नहि भसियाजाइ । अन्तमे कामना करी जे लेखकके कलम स उत्तरोन्तर आ उत्तम कथासथ निरन्तर अबैत रहन्हि एवं मैथिली साहित्यक भंडारमे श्रीबृद्धि होइत रहए ।

- कालीकान्त 'तृषित'
देपुरा रुपैठा
जनकपुर

हमर किछु बात

साहित्यक श्रृजना करब सबहेसँ सम्भव नहि होइछ । दिमाग दू तरहक होइत अछि । एकटा श्रृजनशील दिमाग आ दोसर तेज दिमाग । श्रृजनशील दिमाग साहित्यक श्रृजना कऽ सकैए नहि की तेज दिमाग । हँ, एहिमे आवश्यक होइत अछि अध्यूयनके आ मार्गदर्शनके ।

हमर पहिल कथा संग्रह 'उदाश मोन' मे अध्यूयनक कमी सेहो छलैक आ मार्ग दर्शकके सेहो । मैथिली साहित्यक किछु अग्रजसभ त पक्का चोर छथि । हुनकालग जौ एहि बातक चर्चा करियनि त ओ उमेर पक्के पुछिलेइछथि । आ, किछु उल्टा-सिधा जबाब दऽदियनि त पुछता- 'तोहर औकाद कि ?'

साहित्य सरस्वतीक बरदान छैक । जेकरा उपर हुनक आर्शीवाद छैनि ओ साहित्यक रचना कऽसकैछथि । त एहिमे औकादक बात कहाँसँ अबैछ ।

एहि कथा संग्रहक बारेमे चर्चा करब त एही संग्रहमे जम्मा सातगोट कथा अछि आ मुख्य शीर्षक कथा पोशपुत कतौ प्रकाशीत नहि भेल अछि आओर बाँकी सबहे कथा बिभिन्न पत्र-पत्रिकासभमे प्रकाशित भऽगेल अछि ।

हमरा एहि बेरक कथा संग्रहक तैयारीमे सबहेसँ बेशी सहयोग सर्वश्री कालीकान्त झा 'तृषीत'जी कएलनि अछि । जौ रुदयसँ कही त हुनक एकटा बहुत नमहर गुण छनि जे हमरा दुनित्राक सबसँ नमहर लगैए- ओ किनको छोट नहि बुझैछथिन आ हुनक आँखि हमेशा सभके एकहि रंग देखैछनि । हुनक भरपुर सहयोग भेटल आ अपनेक हाथ ई पोथी पहिनेके कथा संग्रहसँ उच्चस्तरके पोथी बनल अछि ।

ई कथा संग्रहक तैयारीके समयमे हमर आदरणिय मित्र गंगेश गुञ्जन झा जे मैथिली नामक कम्प्यूटर फन्ट श्रविण कुमार मिश्रसंग मिलकऽ बनौलनि हुनका हम कहलीयनि -'भाइ हम मौथिली लिपी आ देवनागरीलीपी दूनुमे किताब निकालऽ चाहैछी । ओ खुसी भऽ कन्भरटर बनौलनि आ हमरा उपहार स्वरुप देलनि । जाहिके प्रयोगसँ मैथिली लीपी आशान भऽगेल अछि ।

एहि कथाक तैयारीक क्रममे सहयोग कैनिहार सहयोगी लोकनिसभके धन्यवाद देने बिना नहि रहिसकैछी । ते सर्वश्री कालीकान्त झा 'तृषीत'जी के अभार ब्यक्त करैछियनि । तहिना बिभिन्न प्रकारक सल्लाह-सुझाब देनिहार आदरणिय श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षिके सेहो आभार ब्यक्त करैछियनि । एवं प्रकारे, जते नहि हम बाजिसकैछी आ नहि त सालो-साल लिखलासँ पुरा भऽसकैए ततेक धन्यवाद हमर आदरणिय मित्रसभ श्री उपेन्द्र भगत नागवंशी, श्री गंगेश गुञ्जन झा, श्री श्रविण कुमार मिश्र, भाइ सरोज खिलाडी संगैह हमर कैम्पसक साथी श्री दिपक पाठक, सुदिप खतिवडा आ डेलचन्द्र अर्याल (क्षितिज) के देबऽ चाहैछियनि ।

अन्तमे, एहि संग्रहक प्रकाशनमे सहयोग कैनिहार हमर माँ परमआदरणिय धर्मकला देवी आ हमर जीवन साथी गुडियाके सेहो हृदयसँ धन्यवाद देबऽचाहैछी ।

धन्यवाद ।

- सन्तोष कुमार मिश्र
२०६४ कातिक छठि
काठमाण्डू

सबहेसँ सुन्दर हमरे खिस्सा

सबहेसा सुन्दर अछि हमर खिस्सा । हमर खिस्सा सुनिकऽ लोकसभ कापऽलगैए, बच्चासभ डेराजाइए, अहाा पढु । अहााक केश भ ऽजाएत ठाढ्ढ । मुाहसा निकलत आगि आ कानसा निकलत धुावा । एहि खिस्साके लेल निर्देशकसभ खोजैछथि निर्माता । लगभग एक दर्जन निर्मातासभ परल छथि हमर पाछा । एहि खिस्साके नुकबैत हमर दिन जाइए । बहान् , प्रधानमन्त्रिके सेहो चाहि हमरे खिस्सा । बेटी, बिपक्षि पाटी सेहो एहिके लेल कटैए घुसकुनित्र । अहा माथपर हाथ द ऽ पकरु अप्पन केश, शूरु करैछी हम अप्पन खिस्सा ।

लगभग चारि बर्ष पहिने निकलल सन्तोष कुमार मिश्रक पहिल कथा संग्रह उदाश मोन बेच ऽकेलेल पन्द्र-बिसटा पिस हमहा लेलहा, तखने जरख्वन लोकार्पन समाप्त भेल । किताब ल ऽक ऽ कनिके आगु बढिते हमर एकदम नजदिकी साथी भेटल । भेटते, किताबपर तकैत लोल चटपट ऽबैत बजलाह -'एकहिटा किताब बहुते पिस रखनेछी, देखु । हम हुनका हाथमे एकटा पिस द ऽदेलियनि । फटसा ओ दूटा पाना उल्ट ऽबैत जेबसा फोकटिया लिड निकालैत बजलाह -'उपहार स्वरुप लिख ने दिअ ।ह हमहा हुनका सप्रेम उपहार लिखक ऽ द ऽदेलियनि । ओ, किताब लेलाक बाद जेना जोरसा दिशा लागल होए तहिना कछमछाइत बजलाह -'एकटा बड़ जरुरी काज अछि, देर सेहो भ ऽरहल अछि . त आओर सरोजजी कि भ ऽरहल छैक ।ह जवाबमे हम हुनका कहलियनि- 'आइ काल्हि जादू सिख रहलछी .सय रुपैया अछि अहााक जेबमे ।ह ओ खुश भ ऽ पाइ निकालैत कहलैथ-'किए पााच सय क ऽदेबै ?ह हम मुस्कैत जबाब देलियनि- 'लाउ ने महाराज एक हजार बनादेब ।ह हुनक खुसीके ठेकान नहि छलनि । पाइ ल ऽक ऽ ओहि लिडसा हमहा लिखलहु 'उपहार स्वरुपह आ, पाछुक जेबसा पर्स निकालिक ऽ ध ऽलेलहा । पाइ जेबमे धैरते किए नइ किए हुनक मुाह सुखाएल भन्टासन भ ऽगेल छलनि । तैयो ओ बजलाह- 'सय टका दिअन महाराज किताब त उपहारमें देलहाअछि ।ह हमहु कहलियनि- 'पाइयो त उपहारमे देलहुहछि ।ह ओ पित्तसा थुक घोटैत, मुस्कैत बाजल -'अपने भैयाके लिखल किताब एकटा दैए देब त कि भ ऽजाएत ।ह ई बात सुनिते हम हुनका एकटा फोन नम्बर देलियनि आ कहलियनि -'एहि नम्बरमें फोन क ऽक ऽ प्रेसवालाके पुछियनि त -'पन्द्र सय एक प्रतिके पाइमे उदाश मोन कथा संग्रह पन्द्र सय दूटा छापिदेलिएअ ?ह एते बात सुनिते ओ लाजसा मुरी निहुारबैत बजलाह -'बहुत बडका बात कहलिए सरोजजी, आइ दिनसा हम किताब त कि किछु नहि किनकोसा उपहार स्वरुप मगबनि ।ह तकर बाद हम आ ओ दूनु अप्पन-अप्पन बाट पकरलहु । मुदा ओ रहि-रहिक ऽ पाछु उनैट-उनैटक तकैत मुाह बरबर ऽबैत चलिगेलाह ।

कथा संग्रह पोशपुत दोसर कथा संग्रह होब ऽके कारण त्रुटी-कमजोरीसा बचिक ऽ कथा प्रस्तुत करब सिख लेने छथि; कथाकार सन्तोष कुमार मिश्र । एहि किताबमे प्रस्तुत भेल खिस्सासभ हम अन्य पत्र-पत्रिकासभमे सेहो पढ़नेछी । हमरा बिश्वास अछि कि ई कथा संग्रह पढ़ ऽलाक बाद कथाकार मिश्रक सराहना करैह परत ।

- कलाकार सरोज खिलाडी
भरद्वितीया पाबनि, २०६४
काठमाण्डू

बिषय -सूची

पोसपुत

भवानीशंकरके बुढ़ारीमे पुत्रसोग देखऽ परलनि ओहो सबसँ छोट बेटाके । रहि-रहिकऽ ओ बेहोश भऽजाइ किए त आओर किछु नहि मुदा ओते कम समयमे मुसमात पुतहू आ दूटा पोती जाहिमेसँ एकटा दस बर्षक आ दोसर पाँच बर्षक, एकटा पोता सेहो छलै जे दूइयो बर्षक नहि । हम जखन हुनकालग बैसली त ओ कानि-कानि कऽ अप्पन घटना सुनाबऽलगलैथ आ हम एकटा कागजमे नोट करऽ लगली ।

ओना ई बात सुनिकऽ ककरो रोंआ ठाढ़ भऽ जएतै जे ओ आई हमरा लग बैसिकऽ सुनारहल छथि । हुनक अप्पन ओ दिन जे बाबुजी जुवानीएमे घर परिवारसँ मतलब छोरिकऽ धार्मीक कृयाकलाप अपनौलथि । आ, तिनु भाईके अपने कष्ट कइयो कऽ पोसि-पाइलकऽ निक बाटपर चलऽके सिखौलथि ।

एक दिनक बात छैक- साँझक समय रहै । पुरा अन्हार नइ भेल रहै तै लालटेमक ईजोत सेहो भकइजोत बुझाइ । भवानीशकरके माय चारु बेटासंगे बैसिकऽ भानस बनऽबैत रहथिन । ताबते हुनक दूनु बटिदार जोगिया आ नगिना ‘मलिकिनी- मलिकिनी’ करैत आंगनमे अएलै ।

एते साँझक समयमे ई सभ कहियो नइ आबऽबाला आदमीके देखिते भवानीशंकरके बुझऽमे चलि अएलै जे पक्का किछु अनिष्ट भेल । हुनक माय सेहो अचरामे हाथ पोछैत बाहर अएली । ताबते भवानीशंकर पुछिदेलखिन -‘कि रे जोगिया, कि भेलौ ?....आइ बड़ अबेर धरि एमहर घुमिरहल छे ।’

जोगिया मुड़ी निहुरएने पुछलकै-‘ बड़का मालिक कहाँ छथिन ?’

बहुत दिन भऽगेल छलनि हुनका आंगन अएला । पुरे गौंआके बुझल छलनि जे ओ मन्दिरे पर रहैछथि । आ, आब सभ किछु हुनक पुजापाठ मात्र छनि नहि कि

घर-परिवार । माय भवानी कने रोखाइएकऽ कहलखिन-'जँ तोरा बड़के मालिकसँ भेटवाक छौ त जो ....पुरे गौंआके बुझलछैहे जे ओ कतऽ रहैछथि, ...पुछिलीहे ।'

एते बाजिकऽ ओ पित्तसँ थुक धोटऽ लगलथि । ई देखकऽ नगिना कने डेराइएकऽ पुछलकै-'आइ मालिक पैतिस बिग्घा खेत ओमप्रकाशके हाथे बेचलेलखिन.........से कि कोनो बिषेश छलैक ।'

ई सुनिते त भवानीक देह पित्तसँ काँपऽ लगलैन । किछु देरक बाद ओ माय पर ताकिकऽ कहलखिन-'एखन त हुनका कोनो चिजक कम्मी नहि छलनि.....तैयो एना किए ?'

पुरा घरक भार हुनके पर होबऽके कारणसँ माय आ बाँकी तिनू भाइसब सेहो हुनका इज्जत करनि । सबहे कातपर निक बिचार कैनिहार भवानीपर घरसँ गाम धरि केओ नाखुस नहि रहै छलैक । तैं माय कहलखिन - 'एखन छोड़ि दिअ, काल्हि भोरे मन्दिरपरसँ बजाकऽ पुछबनि ।'

घरक बात बाहर तक नहि पहुँचे से सोचि ओ दूनु बटिदारके कहलखिन-'अहूँ दूनुगोटे भोजन कऽलिअ तखन चलिजाएब ।'

ई सुनिते दूनु पोन्ह झारैत उठल आ नगिना बाजल - 'नइ मलकिनी, हमर भनसिया भानस बनालेने हैतै ...... बल्की अपने हमरोसभके बिदा देलजाए ।'

बिदे होबऽलेल त ओ कहनहे रहैथ माय ओ सकारात्मक मुरी हिलाकऽ कहलखिन -'ठिके छै ।'

तखन ओ दूनु ओतऽसँ बिदा भेल । दूनु बटिदारके गेलाके बादो हुनका पित्तसँ भोजन नहि घोटानि माय ओ हाथ धोकऽ अप्पन कोठरीमे चलि गेला । हँ एते बात त हमरो कहवाक अछि जे ओ बाबा-दादा वा बाप बड़ नमहर पापी रहैए जे अप्पन बाल-बच्चाक लेल किछु सम्पत्ति नहि मुदा कर्जा जरुर धऽकऽ जाइए ।

भवानीके एते अवश्य बुझल छलैक जे लोक दू पाइ केनाकऽ कमाइछैक । कते मेहनति आ कष्ट कऽकऽ लोक किछु आर्जन करैछ । ओहुना जँ ई बुझल नहि

रहितनि त सतह-अठाह्र बर्षक समयमे एते केना करऽसकैत । राति भरि निन्न नइ परलनि हुनका, अप्पन बाबूजीक बारेमे सोचैत-सोचैत । ई आठ घण्टाक समय एकटा जुग बनिगेल रहैक । मुदा समयके अप्पन गती होइछैक । भोरमे जखन कछमछिया बजलै । ओ कोठरीसँ निकलि सबसँ छोट भाइ बिश्वनाथके जगएला । हुनक आवाज सुनिकऽ माय सेहो बाहर निकलली आ प्रश्न कएली - 'बौआ, कि बात ? सबेरे जागिगेले......... ? कि आइ निन्ने नइ परलौ ?'

ओ मायके बातक कानो जबाब नहि देलकै । ताबते बिश्वनाथ सेहो उठिकऽअएलै आ, अबिते ओकरा कहखिन- 'जो कुरुर कऽकऽ आ ।'

माय बुझिगेली जे ई एखनो धरि पिताएले अछि । माय ओ भवानीक हाथ पकरिकऽ कहली- 'चल भन्सा घरमे .... चाह बनबैछी ।' बिना किछु बजने ओ माय संगे भन्सा घर गेल । माय चाह बनएली । भवानी आ बिश्वनाथके चाह दऽकऽ दोसर कोठरीमे सुतल दूनु बेटा छेदिलाल आ ओमप्रकाशके चाह देबऽ चलिगेली । चाह दऽकऽ जखन ओ पुनः भन्साघर अएली त छोटका चाह पिलेने रहै । ओकरा कहलनि - 'जो रे, मन्दिरपरसँ बाबुके बजाकऽ लागऽ ।' ओ बाबुके बजाबऽलेल प्रस्थान कएलनि ।

ओ जखन मन्दिरपर पहुचल त देखलक जे बाबुजी पुजामे ब्यस्त छथि । ओ मन्दिरक असोरापर बसिकऽ हुनक प्रतिक्षा करऽ लागल । करिब दू घण्टाक बाद जखन पुजा समाप्त कऽकऽ ओ बाहर निकललाह त छोटकाके देखिकऽ आर्श्यमे परिगेलाह । सबहँ पहिने ओकरे हाथके प्रसाद दैत पुछलाह- 'कि बात, केम्हर अएले ?' ओ प्रसाद मुहँमे धरैत, मुहँ लटपटऽबैत जबाब देलकै - 'अहाँके माय आ बड़का भैया बजौलनि अछि ।'

ई सुनिते ओ प्रसादक थारी दोसर पूजारीक हाथमे दैत कहलाह -'हम कने देरीसँ आएब ।' एते कहिकऽ ओ छोटकासंगे बिदा भेला । मुदा बाट भरि एक्कहिटा बात सोंचैत गेलाह- 'किए बजौलक ?' आ, सोचिते-सोचिते कखन आंगन पहुचलाह से हुनका पते नहि चललनि ।

जखन ओ आंगन पहुचलाह तखने हुनक कनित्रा पुछलिह- 'जमिन बेचऽके कोन प्रयोजन छलैय ?'

ओ कनी हँसिएक ऽ कहलाह-'ओना पैतिसे बिग्हा बेचलिए, जाहिसँ अहाँसभके कानो प्रकारक कष्ट नहि होबऽके चाहि .... हम एहि पाइसँ पाठशाला बनाएब, ... धर्म कर्ममे खर्च करब ...... भन्सा बनिगेल अछि त हमरो दिअ...... भुख लागिगेल अछि।' भानसमे कने देर रहै तै हुनक कनित्रा कहलखिन - 'कनिक देर रुकु तरकारी बरकैछै।'

फेर, भवानी पिताएले मुद्रामे पुछलखनि - 'आब त अहाँके किछु नहि चाहि जँ चाहि त एखने बाजिलिअ........ किए त बाल-बच्चाके कष्ट देब पाप छैक, धर्म नहि।' कनिक देर धरि चुप भऽ ओ फेर कहलनि- 'बाहर कतबो पूजा कऽलीअ, जँ घरक लोक खुशी नहि अछि त अहाँ धर्म, ... अँह सोचबे नहि करु।'

बेटाके पिताएल देखिकऽ ओ कने स्थिरेसँ सफाइ दैत कहलाह- 'हमरालग जे जाइ अछि ताहिसँ एकटा बिद्यालयके लेल मकान, एकटा पोखरि आ किछु जगेड़ा कोषमे पाइ धऽकऽ समाप्त भऽजएतै। हमरा भोजन आ अन्य आवश्यक्ता पुरा करऽलेल अलगसँ पाई चाही।' फेर ओ भवानी दिश ताकिकऽ कहलाह - तहूँ अठाह्र बर्षक भेले ..... जे करबे से कर।

हुनका आओर किछुके नहि मुदा सम्पति बिकएला बाद होबऽबाला बेइज्जतीसँ रहै। माय फेर ओ बाबूजीसँ कहलनि -'अहाँके भोजन एतहि आबिकऽ करऽपरत। आ, खर्च जते महिनाबारी चाही लऽलेब मुदा जमिन नहि बेचु। ताबते भवानीक माय भोजन लकऽ अएली बाबू भोजन कएलनि आ तौनीमे हाथ पोछैत बिदा भऽगेलाह। हुनका बिदा भेलाक बाद भवानीक माय एकटा माटिके चुकिया बाहर लाबिकऽ फोरली आ पाइ उठाकऽ भवानीके गनऽलेल कहली।

भवानी ओ पाइ गनलकै। पाई अठाह्र हजार तिन सय संतानबे रहै। फेर हुनक माय सोनाके पहूँची आ, करिब एक किलोके कसुली दऽकऽ कहली - 'ई तोरा पूजी देलीयौ ..... तों केना करबे ...... कि करबे तोही जान, ... तोरासँ छोट तिन भाइ सेहो छौ सेहो बुझिले।'

मायके बातके ध्यानमे रखैत भवानी ई सोचलक जे एहि क्षेत्रमे कि कएलासँ निक होएत आ करिब एक हप्ता घुमफिर कएलाक बाद एहि क्षेत्रमे कपड़ाक

दोकान करब उचित बुझि काज सुरु कएलनि। गाँमसँ कनिके हटिकऽ नेपाल आ भारतक सिमा छैक। साइकिलसँ समान सिमा पारसँ लाबऽलगलाह। कनिक-कनिक समान लैनिहारके भंसारपर सेहो केओ किछु नहि कहै। लगनसँ काज करैत गेलाह। हुनक भोर चारि बजे आ राति बाह्र बजेक बाद होइछलैक। इमान्दारीसँ ब्यापार करऽके कारण गामक प्राय: सबहे आ अराश-परोशक गामक लोक ओकरे लग समान किनै।

समय अप्पन गतिसँ चलैत रहलै। सेकेन्ड मिनटमे, मिनट घण्टामे, घण्टा दिनमे, एवं प्रकारे दिन महिनामे आ महिना सालमे परिबर्तन होबऽलगलै। भवानीसँ छोट भाइसब सेहो नमहर भेलै। माझिल भाइ छेदिलाल ईन्जिनियरिङ्ग पढ़ऽलेल बेङ्गकक गेल। छात्र-बृती भेटलै मतलब पढ़ऽमे निक रहै। साझिल भाइ एम.बि.ए.करऽ दिल्ली गेलै आ छोटका बिद्यार्थीए समयसँ नेतगिरी (राजनिति) करऽ लगलै।

भवानीक बियाह भेलै। निक होनहार लड़िका रहै तैं सबहक नजरिमे गरले रहे। माय बियाह धरि निक इज्जतदार घरमें भेलनि।

एहि क्रममे नेपालमे राजनिति परिबर्तनक समय अएलै। २००७ सालमे प्रजातन्त्रक स्थापनाक लेल एकटा जबरदस्त क्रान्ति एकतन्त्रिय राणाशासनक बिरुद्धमे भेलै। द्वितिय बिश्व युद्धके बाद नेपालमें सेहो एसिया आ अफ्रिकामे आएल नवजागरणके प्रभाव परलै। नेपाली जनतामे स्वतन्त्रताक अनुभूति भेलै आ ओ सब स्वतन्त्रताके लेल आवाज उठाबऽलागल। जाहि क्रममे गंगालाल, धर्मभक्त, शुक्रराज आ दशरथचन्द्र सन सपूतके मृत्युदण्ड देल गेलै। जाहिसँ जनतामे सेहो एकटा आक्रोशक भावना जागृत भेलै।

२००७ साल कार्तिक ११ गते जखन राजा त्रिभुवन शिकारक बहाना बनाकऽ भारतिय राजदुताबासमे जाकऽशरण लेलखिन आ बादमे भारत निर्वासित सेहो भेलखिन। राजा त्रिभुवनके दिल्ली सवारीसँ प्रजातन्त्रक क्रान्तिमे बल पहुँचलै। भारत सरकारद्वारा राणा आ त्रिभुवन बिच समझौताक बातचित चलाओल गेलै। आ, फागुन ४ गते त्रिभुवनके फिर्ति सवारी। फागुन ७ गते शाही

घोषणासँ देशमे एकटा नया भोर भेलै । तत् पश्चात् राणा शासनके मनोमानी खतम भऽ कानूनपूर्ण राज्यक स्थापना भेलै ।

देशमे किछु परिवर्तन होइक ताहिसँ भवानीशंकरके कोनो मतलव नहि । अप्पन नियमितता कहियो नहि तोरलक । भगवानक इच्छासँ हुनका पाँचटा बेटा आ एकटा बेटी भेलनि । ओतबे निक व्यापारी छलैथ ओतबे निक बेटा, ओतबे निक पति, ओतबे निक भाइ आ बहुत निक बाप सेहो ।

लोक किछु कऽले मुदा नेपालमे राजनितिक स्थिरता आबऽके त नहि । बि.सं. २०१७ साल पुस महिनाक १ गते राजा महेन्द्रद्वारा कोइरालाक मन्त्रिमण्डलके आ संसदके बिघटन कऽकऽ देशक शासन भार अपनेमे लऽलेलक । ताहिके बाद दलसभ प्रतिबन्धित भऽगेलै । नेतासभक भागा-भाग भेलै । बिरोध कैनिहारके बिभिन्न सजाय भेटलै । जाहिमें बिश्वनाथके दश-पन्ध्र गोली लगलै । मुदा ओ बाँचिगेल ।

एमहर छेदीलाल सेहो जखन इन्जिनियरिङ्ग कऽकऽ आबिगेल त हुनका काठमाण्डूक त्रिभुवन अन्तराष्ट्रिय बिमान स्थलमे नोकरी भऽगेलै । ओ सेहो पूर्ण इमन्दारीसँ काज करऽलगलाह ।

छेदीलाल जखन अप्पन आम्दनी पूर्णरुपसँ देखलेला तखन हुनका अप्पन बड़का भैया प्रति मद्दत करबाक भावना मोनमे जागृत भेलनि । माय ओ अप्पन भतिजा निरंजनके अपनेसंग राखऽलगलखिन । त्रिचन्द्र कौलेजमे नमांकन सेहो करादेलखिन आ, ओ निकसँ अधयननमे लागिगेल । मुदा घरक स्त्रीक कारणसँ मर्दक सब कएल-धएल सभ पानिमे चलिजाइछैक । सेहे भेलै, छेदीलालक कनित्रा निरंजनसँ भोजनक बरतनि धोबऽसँ घर-आंगन सभकिछु करबऽबनि । आ, जखने ओ अप्पन पतिक मोटरसाइकलक अवाज सुनिलै त ओछाएनपर जाकऽ सुतिरहै आ कहरऽलगै । जखन हुनका डाक्टरलग जचाबऽलेल कहलजाए त ओ कहथिन -'एँह, ... अहिना ठिक भऽजएतै कि ।' समय एहिना चलैत रहलै ।

एक दिन किछु बिदेशी हुनका घरपर अएलै आ किछु कागज-पत्र पर हस्ताक्षर कऽकऽ सहमति जनादेबऽलेल कहलकै । छेदीलाल बैसकऽ ओहि कागजसबके

अध्ययन करऽलग्लाह । ओहिमे पन्द्र हजारक मसिनके अठाह्र लाखक बिजक तैयारी कएलगेल रहैक । ई देखिकऽ ओ एहि बातक बिरोध कएलनि । तैं बिरोध करैत देखिकऽ ओ बिदेशीसब हुनका तिन लाख रुपैया दऽकऽ कहलकनि –'This will makes you agree with us. Please sign it.' तैयो ओ हस्ताक्षर नहि कऽ ओकरासबके डाँटिकऽ भगादेलाह । ओकरासबमेका एकटा आदमी बाजलो रहै -'तोहर भविश्य कारी छौ ।' मुदा ओ एहि बातपर ध्यान नहि देला । आ, करिब एक सप्ताहक बाद एकटा पत्र हुनक नामसँ अएलै जाहिमे हुनकर अवकास पत्र छलैक ।

एहिके अलाबा भवानीक बेटासबमे एकटा बेटा सतिस होटल मेनेजमेन्ट, बिनोद कमर्स, गोपाल एम.बि.बि.एस करऽ बनारस गेलै । सबसँ छोट बेटा दिनेश पढ़ऽमे बड भुसकौल रहै । कहुना घुसकुनिया काटिकऽ एस.एल.सी. पास कएलकै आ आइ. कम. पढ़िते छोरिदेलकै । भवानी एकटा निक आ कुशल बाप रहैथ तैं धियापुताक जिम्मेबारी निकसँ निर्वाह कएलनि ।

अप्पन बालबच्चाक बियाहक सम्बन्धमे गोपालक बियाह झंझारपुर, निरंजनक बियाह मोतिहारी, सतिसक बियाह पटना आ बिनोदक बियाह सितामढ़ि कएलनि । मुदा दिनेशक बियाहक बात जखन चलै तखन ओ एक्कहिटा बात कहैथ- 'एखनधरि किछु नहि कएलहूँ । किछु आर्जन कऽलैछी तखन बियाह करब ।'

दिनेश अप्पन लगन आ मेहनतिसँ बिभिन्न काजक शुरुवात कएलनि । हुनक कहब छलनि जे एहि दुनियामे कोनो काज खराब नहि होइत अछि, निर्भर करऽके तरिका आ करनिहारके सोंचपर फरक परैछ । जे जते मेहनति करत ओकरा ओतबे फल भेटतै । माय हुनका आगु जे काज अएलनि ओ छोरलखिन नइ । लकड़ि ढुवानीसँ लऽकऽ सड़क निर्माणक ठेक्का तक हुनका जे काज भेटलनि सबटा लेलनि आ, भाग्य सेहो साथ देकलनि ।

समयक गति अपने हिसाबसँ चलैत रहलै । गोपालके एकटा बेटी रिना आ दूटा बेटा जाँहिमेंसँ जेठकाके नाम राजा आ छोटकाके नाम छोटु परलै । दिनेश राजाके बड मानै । ओकर पढ़ाइ-लिखाइसँ लऽकऽ आओर सब किछुपर ओ

बिचार कऽदेथिन्ह । आ, दिनेश सब दिन एकहि बात कहथिन्ह -'राजा हमर बेटा छै ।'

एकबेर निरंजन दिनेशक बियाहक प्रस्ताव रखलकै । दिनेशक पएर स्थिर भऽगेल रहै । ओ अप्पन पएरपर ठाढ़ऽ भऽगेल रहे । तैं ओ बियाहक लेल तैयार भऽगेलै । निरंजन अपने ससुरारिमे निक आ खानदानी लड़की पिंकीसंग बियाह कऽदेलकै ।

बियाहक बाद त बहुतो लोक स्थिर भऽजाइए । मुदा दिनेशक व्यापारिक क्रियाकलाप रुकलै नहि । बल्कि आओर तेज भऽगेलै । सच कहथिन हमर बाब"जी - 'मरदाबा उपजाबे धान त मौगी लक्षणमान ।' सबहक कहब छलनि जे हुनक कनिञा लक्ष्मीपात्र छथि ।

एकबेर ओ अप्पन कनिञासँ बिचार कएलनि जे भैयारीमें सबके पूँजी दऽ व्यापार सञ्चालन कराबऽ परलै । कनिञा सेहो सबहक निक सोचि सकरात्मक जबाब देली । एहि बातपर बिचार कऽकऽ ओ बड़का भैया गोपालके बजाकऽ कहलखिन -'भाइ, अहाँ कोनो ब्यापार सुरु कऽलिअ ।' गोपाल कोनो प्रकारक उत्तर नहि देलकै तैं ओ फेर कहलनि -'अहाँके जाहि क्षेत्रमे ज्ञान अछि ताहि क्षेत्रक ब्यापार करु .... पूँजी हम देब ।' ओना सच कही त गोपाल बनारस जाकऽ पढ़ल नहि, नक्कली प्रमाण-पत्र लऽकऽ आएल छलैथ । दिनेश हुनका एक सप्ताहक समय दैत कहलखिन -'एक सप्ताह भितरमे बिचार कऽकऽ कहु अहाँ कि करब ?'

एक सप्ताह ठिकसँ बितलो नहि रहै कि दिनेशलग जाकऽ गोपाल कहलकै- 'हमरा फिल्मके सम्बन्धमे निक ज्ञान अछि तै हम फिल्म डिष्ट्रिब्यूसनके काज करऽचाहैछी .... मुदा एहि काजक लेल कम सऽ कम तिस लाख रुपैया चाही ।' आम्दनीक बारेमे पुछलापर ओ जबाब देलखिन - 'भाग्य जौ साथ दऽदे त साल भरिमे पूँजी निकलि जाएत ।'

दिनेश तिने-चारि दिनमे तिस लाख रुपैया गोपालके देलखिन आ चेताबनी सेहो देलखिन - 'निकसँ काज करऽब, प्रतिष्ठा नहि खसे ।' गोपाल शुरुमे बड निकसँ काज कएलनि । मेहनति, लगन आ धैर्यतासँ काज कएलासँ सबके सफलता भेटैछैक, हुनको भेटलनि । जाहिके देखिकऽ निरंजनके सेहो ब्यापार सञ्चालन करबाक इच्छा भेलनि आ दिनेशलग इच्छा जाहिर कऽकऽ प्रेशवला काजक शुरुवात कएलनि । फिल्मके सम्पूर्ण जिम्मेवारी गोपाल आ प्रेशक जिम्मेवारी निरंजनके सौंपल गेल रहै ।

साझिल भाइ बिनोदक कनिञा सब दिन बिमारे रहऽके कारणे ओ काठमाण्डूएमे रहऽके ब्यवस्था कएलनि । आ ओतै ब्यावसाय करऽलगलाह । सायद बिष्णु लोकसँ लक्ष्मी आबिकऽ ओहि घरमे बास लऽलेने छलखिन तैं सबहक ब्यापार निके रहै ।

एक दिन बिनोद अप्पन कनिञाके लऽकऽ डाक्टर लग गेलाह । हुनक कनिञाक बिभिन्न जाँच कएलाक बाद डाक्टर हुनका एकान्तमे बजाकऽ कहलकनि जे हुनक कनिञा कहियो माय नहि बनि सकती । ई सुनिते हुनका पर पहाड़ खसिपरलनि । जखन ओ डाक्टरलगसँ अएला तखनेसँ ओ त किछु बजबे नहि करैथ । हुनक कनिञा हुनकासँ बेर-बेर पुछबो कएलखिन मुदा ओ कोनो प्रकारक जबाब नहि देथिन्ह । ओइ दिन हुनका दिनोमे अन्हार जकाँ महसुस होइछलनि । ओ घर कटाओन लगैछलनि । मुदा कि ....।

करिब पाँच बजे एकटा झोड़ा लऽकऽ ओ कालीमाटी दिश तरकारी किनऽके बहानासँ निकललनि । किछुए दूर आगू हुनक परम मित्र रामकिशन हुनका भेटलनि । अप्पन मित्रके देखियोकऽ आन दिन जकाँ हुनका चेहरापर मुस्कान नहि अएलनि तैं हुनका बुझऽमे चलिअएलनि जे पक्का कोनो मुस्किलम् अछि । ते ओ बिनोदक हाथ पकरिकऽकहलकै -'रे, चल दारु पिबैछी' दुनू ओतैके भट्टिमे गेल आ ब्रिन्चिपर बैसिगेल । काउन्टरपर बैसल युबकके रामकिशन एक बोतल दारु लकऽ आबऽलेल आदेश देलकै ।

कनिक देरक बाद एकटा पच्चिस-तिस बर्षक महिला एकटा बोतलमें दारु, दूटा गिलास आ एकटा थारीमे मुरही, दालबुट आओर किछु लाबिकऽ टेबुलपर धऽदेलकै । रामकिशन दूनु गिलासमे दारु धएलकै आ एकटा गिलास अपने उठएलकै आ दोसर मिताके उठाबऽलेल आग्रह करैत 'चियर्स' कहलकै । दारु पिबऽके क्रम करिब आठ बजे धरि चलैत रहलै । रामकिशनके त कम मुदा

बिनोदके कने बेशिए निशा लागिगेलरहै । तखन मूँह लरबरऽबैत बिनोद अप्पन मितसँ कहलखिन-‘आइ हमरा डाक्टर कि कहलकऽ से तोरा बुझल छौक ..... नइ होतौ बुझल .... कैला त तु ओतऽ नहि छलेहऽ .... आ ओकर बात हमरा सिधा दिलपर लागल । .... ओ हमरा कहलक जे हमर कनिञा कहियो माय नहि बनिसकैए । ..... ओकरा कहियो बालबच्चा नहि होएतै ।’ एते बाजिकऽ ओ भोकासी पारिकऽलागल कानऽ । बिनोदके कनैत देखिकऽ रामकिशन ओकरा सम्झाबऽलागल । अन्ततः ओ सम्झाबुझाकऽ बिनोदके ओकर घर पहुँचाकऽ अप्पन घर दिश चलल । ताहि दिनसँ बिनोद प्रायः सब दिन पिबऽलागल । एहि बातक चर्चा प्रायः सब दिन घरमे चलै मुदा कारण किनको बुझल नहि छलनि ।

एक दिन निरंजन, दिनेश आ बिनोदक कनिञा लक्ष्मीसंग बैसकऽ बिनोदके दारु पिबऽके कारण प्रति बिचारबिमर्श करऽलेल बैसल मुदा कारण किनको बुझल नहि छलनि । बिभिन्न बातसभक सम्भावना भऽसकैए कहिकऽ ओ सब चर्चा करैतरहे । ताबते लक्ष्मी बजलिह -‘पहिल दिन दारु पियलमे घर पहुचाबऽ रामकिशन आएल रहै । ...... एहि सम्बन्धमे पूर्ण जानकारी ओकरा होएत ..... ।’ ई बातक बाद दिनेश आ निरंजन दूनु भाइ रामकिशन लग पहुचल । बहुत देरक बिचारबिमर्शक बाद ओ घटना पूर्ण रुपसँ कहलकै । तखन दूनु भाई ओतऽसँ घुरि आएल ।

आब बात अएलै समस्याक समाधानके । आखिर कि कएल जाए । दोसर बियाह कऽदेलासँ घरमे मात्र कल्लह बढ़िजएतै आओर किछु नहि । एहि समस्याक समाधान बड कठिन भऽगेलै आ जौं एहिना रहत त भाइसँ हाथ धोबऽपरत । ओ त एकटा आओर नमहर समस्या भऽजाएत । बहुत देर धरि बिचार बिमर्श कएला बाद निरंजन कहलकै -‘हम अप्पन जेठ बेटाके दऽदैछी ।’ तकर बाद दिनेश कहलकै -‘..बेटी चाही त हम अप्पन बेटीके दऽदैछी ।’ आ सेहे भेलै । एकटा पूजाके आयोजना कऽकऽ निरंजन अप्पन आठ बर्षक बेटा आ दिनेश अप्पन तिन महिनाक बेटी सदाके लेल दऽदेलकै । फेर, समय निकसँ चलऽलगलै । नहि त कोनो कष्ट आ नहि त कोनो झंझट ।

दिनेश अप्पन बडका भाइके बेटा अभिषेकके बड मानै । ओ अभिषेकके प्रेमसँ राजा कहिकऽ बजाबै । आ ओकरे सभ दिन आगु बढाबऽमें प्रयासरत रहैछलाह । दिनेशक मोनमे रहै जे ओकरा निक बनाबी आ बेटा ओहे बनिजाए ।

दिनेशक ब्यापार खुब निकसँ चलै । तैं ओ अप्पन ब्यावसायके खुब निकसँ बिस्तार करऽलेल राजधानीमे कार्यालयक स्थापना कएलनि । जे प्रमुख कार्यालय रहलै आ शाखा कार्यालयसभ बिभिन्न जगह । ब्यापार ओतहू निके गतिमे चलैत रहलै । मुदा काठमाण्डू एकटा खर्चाक प्रमुख बाट सेहो छैक ।

आ एकटा आओर बात जे लगभग सबहक मुँहसँ सुनैछीऐ- ‘काठमाण्डू बाबा पशुपतिनाथक एहन धाम छैक जतऽ निक काज कैनिहारके शरण भेटैछैक आ अध्लाह काज कैनिहार जतऽसँ आएल रहैए ओ ओतहू निकसँ नहि रहऽपबैए ।’ ठिक ओहिना भेलै ओकरा अमृत नामक ब्यक्तिसँ परिचय भेलै । जे बिभिन्न ब्यक्तिसभसँ दिनेशके परिचय करौलकै । एहि क्रममे भारतिय ब्यापारी गुप्ताजीसँ परिचय भेलै आ लगले किछु दिनक बाद सोना-चाँदीक ब्यापारी दिपकसँ परिचय भेलै । सबहक बात बुझि ओ अप्पन कनिञा, एकटा फेर बेटी भेल रहै ओकरा आ राजाके लऽकऽ काठमाण्डूए चलि आएल ।

ओ समय, ब्यापारक बड निक समय रहै । बहुतो लोकके इच्छा छलनि जे दिनेशक पार्टनर बनिकऽ काज करी । आ, एहि त्रममे एकटा बिरगंजक ब्यापारी अशोक हुनका लग ब्यापारक लेल प्रस्ताव रखलाह । दिनेश सकरात्मक जबाव देलखिन । मुदा एकटा कहबी छैक -‘सब दिन होत न एक समाना ।’ ब्यापार आओर बिस्तारक क्रममे हुनक किछु साथीसभ सोनाक ब्यापार करऽलेल हुनका बिचार देलकनि । नाफा त खुब रहै । दिनेश करऽलेल तैयार भऽगेल । सोना हङकङसँ अबै आ नेपाल होइत भारत । एक ट्रिपमे दू सँ तिन लाखक बचत । एहि काजमे दिनेश अप्पन टोल परोसक साथीभाइसभके काज देलखिन । सभके एकबेर-दूबेर हङकङ जएबाक मौका भेटजाइछलनि । मुदा एकटा कहबी हमर मा हमेशा कहैछलखिन -‘कुकूरके घी नइ पचैछैक ।’ नहि जानि किए नहि पचैछैक । भऽसकैए ओकरा खाएके लुरि नहि होए ।

दिनेश ब्यापारसभ देखभाल करऽलेल अप्पन माझिल भाइ निरंजनके जिम्मा दऽदेलक । आ, अपने क्यासिनो आ बिभिन्न जुवाक अड्डासभ घुमऽलागल ।

दिनेश एकटा आओर ब्यापार सुरु कएलकै । जखन नेपालमें भ्याट (भेल्यू एडेड टेक्स) बि.सं. २०५२सालमे अएलै आ तकर नियमावली २०५३ क बाद सम्पूर्ण ब्यपारीसभके दर्ता होबऽजाए परलै । ताहि समयमें बहुतो ब्यापारीलग समान त रहै मुदा ओकर बिल त नहि रहै । आन्तरिक राजश्व कार्यालयद्वारा सर्बेक्षण सुरु भेलाक बाद बिलक श्रृजना करब शुरु होबऽलगलै । ई ब्यापार बड चलै । ओ अप्पन टोलक साथी-भाइसभक नाममे फर्म आ कम्पनी दर्ता कराकऽ बिल बेचब चालू कयलक । आ, आम्दनीसँ क्यासिनो जाएब, दारु पियब आदी-इत्यादि । एहि सन्दर्भमे एकटा संस्कृतमे बड सुन्दर कहबी छैक -'भागं फलतु सर्वत्रः न च बिद्या न च पौरुषः' अर्थात एहि दुनियामे जे किछु होइछ भाग्यसँ नहि त बिद्या आ नहि त तागतसँ । भाग्य खराब जौ भऽजाए त ककरो किछु नहि लगैछ । ओकर भाग्य खराब तहिएसँ सुरु भेलै जहिया ओ ब्यापारक देखभाल निरंजनके हाथमे दऽदेलकै ।

बि.सं. २०५७ साल जेष्ठमे हम काठमाण्डू अएली आ २०५८ साल जेष्ठ १० गते दिनेशक अफिसमें एकाउन्टेन्टके पदपर हमरा नोकरी भेल ।

बि.सं. २०५९ साल जेष्ठ १९ गते राज परिवारक हत्या पश्चात देशमे अशान्ति फैललेरहै । तकरबादक तात्कालिन प्रधान मन्त्रि शेरबहादुर देउवाद्वारा देशमे संकटकालक घोषणा भेलाक बाद नेपालक ब्यापारमे मन्दि आबऽलगलै । आ, सुरक्षाक जाँचक प्रभावसँ ब्यापार प्रभावित होबऽलगलै । जाहिमे दिनेश अपने गामपर रहऽलागल । ओतै होटल आ फैक्ट्रीके देखभालमे लागिगेल । काठमाण्डूमे अशोक कहियोकाल अबै मुदा पुरा देखभाल राजाक हाथमे रहै ।

एहि क्रममे एकबेर फैक्ट्रीक अडिट चलैतरहै । हमरा ओतऽ एक्सपर्ट बनिकऽ जएबाक मौका भेटल । मुदा हमरा ओतऽ फैक्ट्रीक हिसाब-किताब कम आ सोना चाँदीवाला हिसाब देखऽलेल बेशी आग्रह कएलगेल । छ बर्षक पहिलेके हिसाब रहै । ओ हिसाबमे की देखाओल गेल छैक से हमरा किछु बुझऽमे नहि

आबे । तिन दिन हम लगातार ओकर अध्ययन करैत रहली । बादमे ई बुझऽमे आएल कि ओ हिसाब गलत रहै । ओहिमे अरसठि लाख नाफा होबऽचाही मुदा मुदा छेहतर लाख घाटा देखाओल छलैक । हम अपना अनुसार ओ रिपोर्टके ठिक बनाकऽ दिनेशक कनित्राक हाथमे दऽदेलियइ ।

दोसर दिन साँझक समय रहै । दिनेश हमरा बजाबऽलेल हमर कोठरीके नोकरके पठौलक । हम तुरत ओतऽ गेलीऐ । सम्मान पूर्वक ओ हमरा बैसऽलेल आग्रह कएलक । हम ओतऽ सोफापर बैसिगेलिऐ । नोकरके ओ ओतऽसँ जाएके लेल आदेश देलकै । ओकरा ओतऽसँ गेलाक बाद दिनेश आ हुनक कनित्रा बातक शुरुवात कएलखिन । पहिने दिनेश हमरासँ पुछलक -

'हँ सन्तोष, जे कागज तोहर चाची हमरा देखऽदेलकौ से .... कि ठिक छौ । तों कतेक बिश्वस्त छे, अप्पन काज प्रति ?'

'जी' -हम जबाब देलिऐ ।

'एतऽके नामी अडिटरके हाथसँ बनाओल ब्यालेन्स शिटके तों गलत कहिरहल छही .. एहि लेल तों बिचार कऽले ....आ, अडिटर संगैह हमर बाप समान भाइ सेहो बदनाम भऽरहल अछि .... एहि बातक बिचार कऽले ।'

हम कने मुस्कैत कहलीऐ -'एकाउन्टमे चचा ई कतौ नहि लिखल छैक जे नामी आदमी बनएतै त गलत नहि होएतै आ नहि तऽ कतौ लिखल छै जे कोनो बडका आदमी बदनाम हुए त चुप भऽजाइ । .... आ ओहुना हमर गुरुजी पढ़ऽएने छथि जे अडिटक काम गल्ती आ जालसाजी पत्ता लगाउ आ ओकर रोकथाम करु ।'

हुनक कनित्रा हमरासँ फेर पुछलखिन -'अहाँके अप्पन हिसाबपर भरोशा अछि कि नहि ?'

सकरात्मक मुरी हिलाकऽ हम जबाब देलिऐ । फेर ओ सभ अडिटर आ भाइसाहेबके बजाबऽके बात कएलनि । हम फेर कहलियनि -जी हमरा एकटा अनुभव अछि जौं ओ अडिटर दोसरके कहलपर हस्ताक्षर कएने होएत त ..... नहि आओत ।

'हेतै, ... अहाँ जाउ, अराम करु ।' -हुनक कनित्रा हमरा कहलखिन । हम ओतऽसँ अप्पन कोठरीमे अएलहुँ । किछु देरक बाद खाना त खएली, मुदा निन्न नहि आबे । रातिमे कखन निन्न परल से धरि बुझबे नहि कएलिऐ ।

भोरमे करिब आठ बजे नोकर चाह लऽकऽ उठाबऽ आएल । आ, चाह हाथमे दैत कहलक-'निरंजन भैया सेहो आएल छथि, ... किछु पिताएल जकाँ बुझाइछथि ।' हम ओकरा हाथसँ चाह लऽलेलिऐ । चाह पिलाक बाद ओतै राखल लोटामेका पनिसँ हम मुहँ धोएलिऐ आ रुमालसँ मुहँ पोछैत निच्चा उतरलिऐ । हमरा देखिते निरंजन पिताकऽ बाजल -'कि रे, तों तऽ हिरो भऽगेले ?'

तखने दिनेशक कनित्रा निरंजनके कहलखिन -'आप उसको कुछ मत बोलिए ....नहि तो ठिक नहि होगा .....'

एतबे बात पर ओ शान्त भऽगेलै । तखन दिनेश हुनकासँ पुछलकनि -'भैया, ओ अडिटरके कि भेलै ?'

एकदम शान्त भऽ बिनम्र आवाजमे निरंजन जबाब देलकै -'ओ त बाहर गेलछै ।'

'त .... अहाँ सन्तोष जे हिसाब निकाललकैए से देखलिए, कि नहि ....?'

'हँ, देखलिए ।'

'कि बुझाइए ?'

दिनेशक प्रश्न सुनिते निरंजन बजलै -'गाँरि धोबऽके त लुरि छैहे नइ, ... ओ कथी हिसाब निकालतै ।'

हमरा बेइज्जत कऽकऽ बजैत सुनिकऽ दिनेशक कनित्राके बरदास्त नहि भेलनि आ ओ निरंजनके डटैत बजलिह -

'माइन्ड योर ल्याङ्गवेज .... आप मुहँ सम्हालकर बोलिए .... एक अफिसर रैंकके आदमीको आप इस तरह बोलते आपको शरम आनी चाहिए ।'

जहिना ओकरा डाँट परलै ओ मुहसँ गारि निकालिते ओतऽसँ चलिगेलै । हमहुँ अप्पन काठरीमे जाकऽ कपड़ासभ जे बाहरमे रहे ओहिके बैगमे धऽकऽ बाहर निकलैत रहि । ई देखकऽ दिनेश हमरा हाथसँ बैग लऽलेलक । आ, हाथ पकड़िकऽ अप्पन कोठरीमे लऽजाकऽ सोफापर बैसऽलेल कहलक । ताबते हुनक कनित्रा सेहो निरंजनके गारि पढ़िते ओहि घरमे अएलखिन । जखन ओ सेहो बैसगेलखिन तखन दिनेश गम्भिर भऽ हमरा कहलनि -'देख सन्तोष, लोक जीवनके छोट कहैछैक, मुदा जीवन छोट नहि छैक । एहिमे लोक जस-अपजस, ... धर्म-पाप, ... प्रेम-घृणा, आदि बिभिन्न चिजक भागिदार बनैछ । हालाकि केकरो किछु लऽलेलासँ किछु नहि बिगड़ैछैक ।..... एकटा चोरके बारेमे जौ कहऽपरै त ओ केहन केहन घरमे चोरी करैछ, मुदा पुरी त नहिए परैछ । .... माय हमर कहबाक आशय ई अछि जे भेलै भऽ गेलै । ...... जहिना तों रातिमे कहले जे ओ अडिटर नहि आओत तहिना नहि आएल .... जखन की ओ हमरा भोरमे भेटले छल । ..... खैर, तों ई अडिट कऽकऽ हमर आँखि खोलि देले माय एमकी बेरके सभहेसँ नमहर प्रमोशन तोरे भेटतौ । ..... हँ, आब कह तों ई बेग लऽकऽ कतऽ चलले ?'

हम मुरी गोतनहि कहलियइ -'मुड अफ भऽगेल जनकपुर जाकऽ चलिअबैछी ।'

ताबते हुनक कनित्रा बजलिह-'भोजन कऽलिअ, तखन चलिजाएब ।'

बात काटब उचित नहि रहे माय हम भोजन करऽबेर तक रुकिगेली । भोजन कएला बाद दिनेश हमरा एकटा लिफाफ देलक । तकर बाद हम ओतऽसँ जनकपुर चलिदेली ।

काठमाण्डूअफिसक परोशमे एकटा अडिटक अफिस रहै । आ ओतऽ सुजाता नामक एकटा लड़िकि काज करै । देखऽमे मूँह-कान त निके रहै मुदा ओ लोभी प्रबृतीके रहै । राजाके अप्पन मुँह-कान त निक रहै नहि मुदा काका वाला पाइ त रहै जाहिके बलपर बराबर स्पेशल नास्ता आओर बिषेश ब्यवस्था करै । ओ लोभसँ ओकरा पाछु पड़लापर राजाके अनुभव होइक जे ओ ओकरासँ प्रेम करऽलगलीह ।

माओवादीक चन्दा आतंकके प्रभावसँ दिनेश अप्पन अफिसके घरमे लऽगेल मुदा राजाके सुजातासँ भेटऽबाला क्रम चलैत रहलै । बजारमे ब्यापारीसभ लग पाइ बाँकी त रहबे करै आ ख्याती सेहो । जेकरा कहै केओ नहि नइ कहै । ओ जतऽसँ चाहै पाइ उठऽबै आ सुजाता जे कहै किनदइ .... ।

किछु दिन बाद दिनेश बिमार भऽगेल । काठमाण्डूसँ दिल्ली धरि इलाज चललै । ओमहर अशोकक लगानी सबटा डुबिगेलै । क्यासिनोक प्रभाव पड़िते रहै । दोसर दिश राजा सबहे पार्टीसभसँ अग्रिम पैसा उठाकऽ सुजातामे खर्च करऽलगल । रोकऽवाला केओ रहै नहिए । एक दिश स्टाफसभके तलब नहि आ दोसर दिश चालिस-पचास लाख रुपैया चारिए महिनामे राजा खर्च कऽदेलकै ।

दिनेश बेटा कहिक पालने जे पोशपुत रहै जेकरा ओ प्रेमसँ राजा कहथि से साँप रहै से हुनका बुझल नहि छलनि । ओ त सोचथि जे हुनका बाद हुनक ब्यापार आ परिवारक देखभाल राजा करत मुदा ओ ....।

दिनेशके दवाइसँ किछु दिन ठिक रहै आ फेर जहिनाके तहिना । दारुक कारण किडनी खराब भऽगेल रहै । एहिना एकबेर हुनका बड़जोर मोन खराब भऽगेलनि त एम्बुलेन्ससँ पटना लजाइते बेर ओ अप्पन पत्निके कोरामे ई संसारके छोरिकऽ सदाके लेल चलिगेला । ओतैसँ सतिश फोन कएलकै । हमरासभके मालुम भेल । राजा संगहि ओकर परिवारके अन्य सदस्यसभ सोल्टि होटलके गाड़ी लऽकऽ गेलथि । आ हम आ रंजन बससँ गेलीयइ ।

बसमे हमरा त कनी देर निनो परल मुदा रंजन भाइजीके निन्न साफे नहि पड़लनि । किए त हुनको नामक एकटा कम्पनीसँ कारोबार बहुत भेलरहै मुदा आयकर एक्कहुटा रुपैया बुझाओल गेल नहि रहै । सायद स्टाफसभमे सभसँ बेशी ओहे बेचारा दुःखी रहे । मुदा दिनेशक अप्पन ब्यबहारक कारणे ओ हमरा कहलनि -'सन्तोष भाइ जिवनमे कहियो हमरालग कने बेशी पाइ अएलै त हम दिनेश भैयाके नामके धर्मशाला वा बिद्यालय जरुर बनादेबै ।'

प्रातः स्थानिय बजार सोगमे एक दिनक लेल बन्द भेलै । आ करिब चालिस प्रतिशत परिवारमे कन्नारोहट । दिनेशके मरलाक बाद राजा आ ओकर बाबू

गोपालके त लौट्रीए पड़िगेलै । लोकके देखाबऽ लेल कानऽलगै आ फेर एक आपसमे खुसी बाँटऽलगै ।

राजा जे दिनेशक पोशपुत रहै ओकरा अप्पन धर्मक मायसँ ताबते मतलब रहै जाबे ओ दिनेशक ब्रास्लेट, औंठी, लकेट आ अन्य गहनासभ लेबऽके रहै । ओकरा हम एकबेर रोकबो कएलियइ मुदा माय त बुझे जे बेटे त अछि । आखिर ओ गहना की होइक, कतऽ जाइक ? त अकसर राजा गहनाके बैंकमे धऽकऽ पाइ निकालै आ सुजाताके कहियो नगरकोट, त कहियो धुलिखेल, कहियो दामन आ कहियो कतौ त .... । ई क्रम चलैत रहलै ।

दिनेशके देहान्तक बाद सुरेन्द्र आ रंजन दुनु नोकरी छोड़िदेलकै मुदा हम नोकरी नहि छोड़ने रही । कहबी छैक -'कौआ भेल भण्डारी त गुँहे-गुँह टार ।' सेहे भेलै । दिनेशक मरला बाद अफिसक कार्यभार सतिश, गोपाल आ निरंजनके हाथमे चलिगेलै । पहिलेके बितल घटनासबहक कारणसँ हमरासंगे सेहो किछु निक ब्यबहार नहि होए माय हमहुँ छोडिदेलियइ ।

मुदा, ओहि परिवारसँ हम अखनो नजदिक छियइ । ई कथा लिखऽसँ किछु दिन पहिने दिनेशक कनित्राके एते ओसभ दुःख देबऽलगलै कि ओ नैहर चलिगेलि ।

एकटा ब्यथा पत्रमे

आदरणीय गुरुवर

प्रणाम ।

अहाँक आर्शीवाद छैक हम शारिरीक रुपसँ स्वस्थ छी । आइ जीवनमे पहिलबेर अहाँके लेल एकटा पत्र लिखऽके मोन करैए । जखन कि हमरा बड़ निक जकाँ बुझल अछि जे अहाँ हमरासँ एते दूरछी जे ई पत्र पहूँचऽके बाते नहि । मुदा हम अप्पन मोनके बुझाबके प्रयास कऽरहलछी । एखन निश्बद्ध राति छै । सबगोटे सुतिरहल छैक । आ हमरा निन्न नहि आबिरहल अछि माय हम कोठरीसँ बाहर निकलल छलहुँ ।

अकाशक तारा एक-आपसमे आँखि भिमकौअल खेलरहल छैक । आ, चन्द्रमा त अप्पन रुपक बजार पसारने छैहे । बाहर कुकुर सेहो आन दिनक अपेक्षा बेसी भुकिरहल छैक । आ कुकुर नढ़ियाक आवाज सुनिकऽ हमरा एते डर लागल जे हम फेर घरेमे आबिकऽ बैसिगेलहुँ ...... आ समय किछु कटाजाए से सोचिकऽ ई पत्र अपनेके नाम लिखऽके प्रयास कऽरहलछी ।

नहि जानि आइ किए नहि किए हमरा निन्न नहि परिरहल अछि । दिन भरिके सोंच एकटा घुटन बनि गेल अछि । ...... नहि जानि एखन कि-कहाँक बात हमरा मोनमे आबिरहल अछि । आ, फेर बेर-बेर हमरा एकहि बात मोन परैए- ‘जहिया हम गाम आएलरही त मोनेमन सोंचने छलौ जे आबऽके खबर सुनि काका-काकी आ, पड़ोशीसभ भेटत । समय सभ ठामक बदलिगेलाक बाबजुदो ओहे पुरान यादके ताजा कऽकऽ सुख-दुःख बाँटव, गाँममे खुशियाली होएतै । मुदा जखन हम केवार ढकढकएने रही– त माय खोललखिन । बाबूजीके खोकीके आवाज मद्धिम-मद्धिम अबैत रहै । आंगन आ असोरा खढ़-पतार आ गर्दासँ भरल रहैक । सन्दुक, अनवारी आ पेटी संगहि सब सरसमान अस्त-ब्यस्त परल रहैक । आ, देवालक स्थिति देखकऽ अनुभव भेलछल जेना कोनो भूत बंगला ।

बाबूजीक देह त एहि बेर पहिलेके तुलनामे आधा भऽगेल छलनि । बुझाए जेना मात्र हड्डी । हम जखन पएर छुकऽ प्रणाम कैलियनि त हकहकाति कहलैथ - ‘के ? .... बौआ, खुश रहा । आन बेर जकाँ एहि बेर हुनका चेहरा पर नहि त खुशीक रोशनी छलनि आ नहि त ममता । माय पिढ़ी लऽकऽ बैसिगेलखिन । घरक सब बस्तु पर नजरि गड़ौलहुँ फेर माय आ बाब”जीक मुँहपर तकलहुँ । देखकऽ अनुभव भेल जेना ई अप्पन घरे नहि । ओहि घरक सुनापन देखिकऽ हमरो मोनमे डर लागलरहे । ओही घरक चारु दिशसँ मृत्युक कारी छाँही, श्मशानसँ बेशी चुप्पी आ बिधवाक आँखिक नोरक ब्यथा नुकाएल छलैक ।

घरमे मुर्दाक बसेरा बुझाएपरइ । एतऽ जिनगी सभ दिनक लेल सुतिरहल बुझाइ । एतऽ कखनो कुकुरके कानल आवाज त कखनो नढ़ियाक आवाज सुनाइ परै । एहन हमर घर त नहि रहे जेहन एखन लागिरहल अछि । जाहि घरमे हमर हंसीके अवाज गुन्जैतरहै छलैक आइ ओहि घरमे हम कानियों नहि सकैछी । घरक कण-कणमे जीवनक मुस्की रहै ..... मुदा ई ओ घर नहि अछि ।

माय-बाबूजी मात्र हमर मुँह तकैत रहथि । आ, आँखिमेसँ गंगाजी बहैतरहै । कनिक देर हमहुँ बाबूजीक कातमें बैसिगेली । किछु महक संड़ल जकाँ सेहो अनुभव होए । ई सभ देखिकऽ मोनेमन होबऽलागल जे ई मोटाएल देह ककरो नहि देखाबी । हम खाट परसँ उठिगेली । देवालपर जे घड़ी लटकाओल रहै ओकरो अवाज एनाक टकटक अबै जे सुनिकऽ आओर डर लगै ।

ओतऽ बैसले-बैसल आओर पुरान बातसभ हमरा दिमाग पर नाचऽलागल । गाँमसँ शहर हम किछु आर्जन करऽगेल रही । बेरोजगारीक समस्या त कतऽ नहि छैक मुदा ई किछु आतंककारी लोभी पार्टीसब देशके सत्यानास कऽकऽ बैसल छैक । मुदा तैयो, जे काज जतबे दिन लेल भेटै ओ करी आ, संगी सभसं नुकाकऽ जतबे बचै ओ नुकाकऽ राखी । सभ दिन गाँम मोन परे । आ, गाँमक मोन परिते माय-बाबूजी आँखिक सामने भऽजाथिन । बाबूजीक धोती आ मायक नुआ जे मोन परे त अपनेसँ लाज लागिजाए । अप्पन जवानीमे ओ सभ कहियो दुःख नहि कटला । चाहे अठाढ़ बिग्हा बिकागेलनि त कि ? आब त रहऽ

लेल मात्र घर । .... जा मुदा ओ कहाँ छै ? ओकरा त हम तकबो नहि कैलिए– जेकरा हाथसँ मेहदीक रंग मेटाएलो नहि रहै आ हम छोड़िकऽ चलि गेलिए ।

हमरा हमर प्राणप्रिय पर ध्यान जाइते हम छटपटा गेलहुँ । लगलहुँ आगु-पाछु, एमहर-ओमहर देखऽ । हम त अग्निक साक्षि मानि सात फेरा लगौने रही । लोह, पाथर, पानि आ आगि छुकऽ सप्पत लेने रही । ओ कहाँ छथि ? फेर, हमर नजरि हुनकापर पड़ल । ओ त ओहे नुवा पहिरने छथि जे दुरागमनमे पहिरने रहथि ।

हुनका देखिकऽ बुझाए परे जेना ओ आगु आबिकऽ पाछु चलि जाथि । हमरा एहने बुझाए जे ओ हमरा बजारहल छथि । स्वभाविक छैक । नव कनिञा, आ सासु-ससुर एतऽ बैसल । केना अएतै । लाजो लागऽके त स्वभाविके छैक । हम एकदमे स्थिरसँ हुनका दिश बढ़ऽलिऐ ।

मुदा, जखने ओहि घरमे पैसली त एकबेर बड़ जोरसँ इजोत बड़लै । आ, फेर अन्हारे । हम अप्पन प्राणप्रिय जीवन संगीनिके ताकिरहल छी । हमरा पएरमे किछु गुजगुज जकाँ सटल । हमरा जेबमे लाइटर रहे । निकालिकऽ बारलहुँ । .... ईजोत होइते देखलहुँ .... माय, ... बाबुजी, ... आ हमर ओ सेहो सभ एतऽ । निचा बसिकऽ देखलहुँ .... सबहे गोटा एकही ठाँम सुतल । जखन छुकऽ देखलहुँ त सबहे गेटा मरिगेल रहै । हमरा छुकऽ देखला बादो विश्वास नहि भेल आ हम जल्दीसँ बाहर निकललहुँ । बाहर त केओ नहि । त फेर ओ सभ के छलै ? फेर भितर आबिकऽ देखलिए त कनिञाक पेट चिरल आ अतरी बाहर निकलल, बाबुजीक आँगुर काटल, मायके हाथ-पएर डोरीसँ बान्हल । कि एहने होबऽचाही । सबहे लासमे किरा फरिगेल रहै ।

एत जिवन बड कठिन छैक । एतऽ जीवऽके लेल अपनेक आर्शीवादक आवश्यकता अछि । ई गाम हमरो छोड़िकऽ जाए परत या त फेर हमरो मारिदेत से धरि ठेकान नहि छैक । बिषेश कि लिखु ।

अहाँक शिष्य
सन्तोष

जखन कनिञा भेलखिन बिमार

हँ मैथिलके मात्र कि कहू, एतऽ सब ऐरे-गैरेके बियाह होइते छैक । चाहे ओकर मुँह थुराएल अल्हुवा सन होइक चाहें शिताएल नढ़ियासन । खैर, बियाह त भऽजाइ छनि मुदा किछु बातक लेल जीनगि भरि सेहन्ता लागले रहिजाइछनि । मोनमे बेर-बेर होइत रहै छनि -'हमरो एहन होइत....' मुदा कि ? भाग्य अप्पन-अप्पन ।

ठिक ओहिना, हमरो बियाहक एते बर्ष बितगेल । मुदा ....। संगीसभ भेटहुए त सब अप्पन-अप्पन कनिञाके बिमार होबऽबला खबरि बैसख्खा घेराजकाँ मूँह बनाक सुनाबऽलागै । हमहुँ सेहो बैसख्खा सजिमन सन थुथुर बनिक सुनऽ लागी । कतबो धाहसँ सिद्ध होबऽके बाते नहि । किए त हमर कनिञा कहियो बिमार पड़बे नहि करथिन्ह । ओ त अपने पहलवान, पुलिसमे असइ रहथिन्ह । संगीसबहक बात सुनिकऽ एकहि बातक सेहन्ता लागए आ मनमने एकहि बात कहि ; रुक ! भगवान एक दिन हमरो दिन सुदिन करथिन्ह , हमरो कनिञा बिमार परथिन्ह ।

आ, एक दिन भगवान हमर मनक बात सुनिलेलखिन । जखन हम अफिससँ घर अएलहुँ त जुत्ता खोलिते समयमे मधुर-मधुर आवाज आएल -'माइ गे माइ .... बाबुहो बाबु' के मधुर अवाज सुनिकऽ हमर मोन गदगद भऽगेल आ, हम खुसी भऽ जल्दीसँ घरमे पैसलहुँ । आ, हुनकासँ पुछलियनि -'कि मोन खराब भऽगेल ।' कुहरैत उठली आ कहली मोन खराब होए दुसमनके, हमरा त पिठमें कि नहि कि भगेल सें दुखाइए, यौ ।'

ई बात सुनिते हमरा लागल जेना हमरा लौटरी परिगेल । मन त खुसीसँ गदगद भऽगेलहुँ । हमहूँ कलाकार, कला प्रस्तुत कऽकऽ ई जरुर अनुभव करादेलियनि जे हम दुःखी भऽगेली । आ, दुःखी मुद्रामे कहलियनि - 'कोनो निक डाक्टरसँ जचाँ

लेव त......?' ओ कुहरैत हमरा मुहँ पर ताकि बजलिह -'डाक्टरके घरेमे बजालेब त नहि होएत ?' घरमे त डाक्टरके बजालेब ..... ठिके छैक, एकटा डाक्टरके नंम्बर त डायरीमे अछि हुनके बजालैछियनि । फोन डाएल कएल मुदा फोनक लाइन त कटल छलैक । एकटा डाक्टरक लाइन कटल देखकऽ किछु नहि फुराएल । हम चुप्पेचाप किछु देर धरि ओतै बैसलरहि गेलहुँ ओ हमरा बैसल देखकऽ कने भ्कसकिकऽ कहली- 'सुनै नै छी, जल्दी जाउ न, ...नहि त हम मरिजाएब ।' ई सुनिकऽ हम आओर हर्षित भऽ गेलहुँ, मुदा कि करु ओहन शुभ दिन अप्पन भागमे कहाँ लिखल छैक ? हम त खुसी भऽकऽ सोंचऽलगलहुँ जे बात किछु आओर रोचक भऽजएतै जखन हम अप्पन संगी सभके ई खुसीक खबरि सुनएबै । ताबते जेना केओ अनचेकेमे लुत्ती सटादेए तेहने आवाज आएल -कथि मुहँ तकैछी......जलदीसँ जाउने आ सप्तरीवाला डा. रोबिन मिश्रके टिचिङ्गसँ बजौने आउ ।' हम कहलियनि -'हँ, हँ हम तुरत्त गेली आ अएली ।' कहऽ लेल त एते कहि देलियनि । बाबूजी कहै छलखिन- 'बचने किए दरिद्रता ।' मुदा मोन तऽ गदगदाकऽ फटकार लगौलक- 'डाक्टर त बादमे पहिने संगीसबके खुसीक खबरि त सुनादिऐ ।' आंगनसँ जखन बाट पर अएलहूँ त सोंचऽ लगलहुँ -केम्हर जाउ ... एम्हर कि ओम्हर ..... हम त बड़ मुसकिलमें पड़िगेलहुँ जे आखिर केम्हर जाउ ?

खैर, एक बेर ओकरो बकैस दैछी .... पहिने डाक्टरेके बजादैछी । बिभिन्न बात सभ कल्पना करैत जखन डाक्टरके घरपर पहुचलहुँ त ओ घरे पर रहथि । ओ हमरा देखिते पुछलैथ -'कि होइए कहूँ ?' हुनका जखन सभकिछु कहलियनि त हुनको जेना लैाट्री परिगेलन्हि तहिना ओ अप्पन भ्कोड़ा लऽकऽ हमरोसँ आगु-आगु दौर लगलैथ किए त काज त भेटबे नहि करैछनि । कारण ई कि डाक्टरसबहक पेटपर लात मारनिहार बाबा रामदेब जे जिबते छथि । हम हुनकर सर्ट पकड़िकऽ तनैत कहलियनि - 'हे भाइसाहेब, बिमारी कोनो खासे सिरियस नहि छैक .... कने आरामसँ चलु ।' हमहुँ मोट आदमी,ओते जल्दी चलब आ कहुँ हम अपने बिमार पड़िगेली त कि होएत ? ..... मोनक ललसा कहियो पुरा नहि होएत ।

डाक्टर संगे जखन घर पहुँचलहुँ त देखैछी पड़ोसीसभमे केओ भरि-भरि गिलास चाहे लऽकऽ बैसल त केओ भन्सा घरसँ अबैत । हाल-चाल पुछनिहारके

आदर-भाव देखकऽ किछु नहि फुराए । किनका रोकियनि आ किए रोकियनि ? भगवान बहुत दिन बाद ई मौका देखऽदेलनि अछि । एकटा कहबी छैक- 'खुसी बटलासँ बढ़ैछै ।' डाक्टर साहेब रोगीके खुब निक जकाँ तकलनि मुदा रोगी त भेटऽके बाते नहि किए त रोगी 'आह-उह, गे माय गे माय, उहुहु' करैत चाह बनाबऽपर लागल रहथिन । ओना सच्च जौ कहऽ पड़े त एते परोशीसभ हमरा बियाहमे सेहो नहि आएल रहथिन । नहि जानि ई किए ? माय त हमर नंगटीनी नहि छथि .... मुदा कनित्रा सूनरि जरुर छथि । ताबते एकटा परोशी बाजल - 'कि रे घनचक्कर दास ! आइ सबेरे चलिआएलछे ?' मोनेमन सोचलहुँ सबेरे नहि आएल रहितहुँ त तोरासन चोट्टासँ केना भेटघाट होइत । सरबा रहे हमरे कनित्रालग सटिकऽ बैसल । माय हम मुहँ दुसैत कहलिए- हँ, आई एहि घनचक्कर दासके तकदीरमे चक्कर लगाबऽके लिखल छैक त कि करौक ? एते दुःखीक अभिनय करैत बाजल आवाज सुनिकऽ ओ बाजल -'मुदा , अहाँ एना किए बजैछी ?'चोट्टा, सायद ई बुिभ्कगेल जे हमर शुभश्री मुँहसँ ओकरे लेल आर्शीवाद निकलैए । खैर, हमरा त अप्पन कनित्राके जनाबऽके छल ते हम अप्पन खुसीके मगरकच्छके नोरमे भिजाकऽ कहलीए- 'किए नहि बाजु, आइ हमर प्राण प्रिय बिमार भऽगेली ।'

चाहक घुट लऽकऽ लोल चटपटऽबैत फेर पुछलक- 'ई केना भेलै ? कहियासँ ? किया भऽगेलै ?' गुरुजी बेर-बेर कहैछलखिन-प्राक्टीस मेक्स परफेक्ट द मैन ।' एहि प्रश्नसँ हमरो पूर्णता आबिसकैय ते हम कला प्रस्तुत करैत जबाब देलीए- अरे, जखने हम अफिससँ अएलहुँ कि ....।' बात पूरा भेलो नहि रहे कि एकटा परोशी बिचेमे बाजल -'लिअ सर हम जाइछी ।' ओकरा जाइत देखिकऽ हमरो मोन अपनामे पूर्णता आबऽके अनुभव कैलक ताहि कारण ओ भाइसाहेब एतऽसँ बिदा भेलैथ । सबहे दिन एकर सबहक बात सुनिकऽ हमहुँ थाकिगेल रहि । आब मुदा तराजुक दूनु पलरा बराबर भऽगेलै । ताबे डाक्टरसाहेब जोरसँ कहलखिन -'कहाँ गेली .... ई दबाई कने जल्दीसँ लाबिकऽ दिअ ......साँभ्क धरिसभ ठिक भऽ जएतै ।'

डाक्टरसाहेबक बात सुनिकऽ हमरा मुँहसँ निकलिगेल -'कोनो जल्दी थोरहे छै ।' ताबते चाहक चुस्की लैत परोशनी बाजलीह- 'देर करब उचित नहि ।'

हमहुँ ओकरे आबाज निकालिकऽ मुँह दुसैत कहलिऐ -हमर कहबाक मतलब छल जे दू मिनट आराम कऽलैछी । एते कहिते ओ कप टनटनऽबैत निचा राखिकऽ ‘हुँह’ कहलीह आ बिदा भऽगेलीह । कनित्रा त पलंगपरसँ जेना हमरा घोटिजएती तेना परलपरल देखऽलगली । हम दबाइ लेबऽ बिदा भेलहुं ।

हमरा ओम्हरसँ अबिते गामबाली दाइ पुछलखिन- ‘कनित्रा, मोन केहन बुझाइए ?’ हँ एहनेके छुछ दुलार कहैछै । नकारात्मक संकेत करैत ओ मुरी हिलऽएली । मतलब साफ रहै ‘ठिक नहि अछि ।’ कनित्राके कुहरैत छटपटाति देखिकऽ मजा लैतरही । ताबते हमर परममित्र रंजित पहुँचिगेल । चारु दिश ताकिकऽ ओ पुछलक-‘कि भेलै भौजीके रे ?केओ जे ई प्रश्न पुछए त मोन त गदगद भऽजाए । मुदा ओतै रही । आ, ओहुना पुलिससभके मुँह आ हात दूनु छुटल रहैछै । माय हम सुखाएल भन्टासन मुह बनाकऽ कहलीए-‘बिमार भऽगेली रे हे’ आ जाबे किछु बाजे ताबे ओकर हाथ पकरिकऽ बाहर लऽगेलीए । ओ हमर हाथ छोराकऽ पुछलक -‘डाक्टर कोन बिमारी कहलकै ?’ हमरा ओकरासँ कोनो बात करऽके मोन नहि करे माय हम कहलीए-‘रे हमरा याद त नहि अछि कथिदोन संस्कृतमे कहने छलैए ।’ ओ पिताकऽ बाजल-‘केना नहि बिसरबे .... तोरा त ध्यान रहैछौ रिसेप्सनिष्ट छौरीपर ।’ हम चारु दिश ताकिकऽ कहलीए -‘चुप..चुप ।’

कने देर चुप भेला बाद, मोनक बात निकलिगेल । ओहुना बहुत देरसँ मोनमे छटपट्टी रहे जे ई बात ककरा सुनाउ । ते ओकरा सुनाबऽ लगलीए- सच्च पुछैछे त रंजित भाइ, दबाइकिनलाक बादो मोन होइछल जे फेकदी । कहुँ ओ चोट्टी ठिक नहि भऽजाए । एते बतियाति जहिना घरमे पैसलहुँ त ओकर बड़का भैया पलंगपर बैसिकऽ परौठा आ भुजीयाक प्लेट हाथमे लेने बकरी जकाँ पाउज करैत रहे । हम ई देखिकऽ थकमका गेलहुँ आखिर ओ साहबनी गेली कतऽ ? ताबते पाछुसँ हमरा डाढ़पर एक छोलनी लागल, छोलनी धिपल सेहो रहै । हम छिलमिलाइते बाहर भगलहुँ आ आब मात्र प्रतिक्षा करऽ लगलहुँ कि ओ अफिस कखन जएतीह ।

सिपाहि

“लोक कि कहैत हायत, जे बेटीके दुरागमन भेला एक वर्ष भऽगेलै मुदा नैहर सँ केओ नहि गेलै .... एकटा बेटा अछियो त देशक भक्त ।...... बेटियो कि सोचैत हायत ।” ई बात सन्तोषक माय सोचिते रहैक की ताबते सन्तोष हाथसँ झोड़ा निचा रखैत पैर छुकऽप्रणाम कएलकै । सन्तोषक माय ओकरा मुँहपर ताकिकऽ कहैछ “बौआ रे .... तोरे बारेमे सोचैछलहु ।”

ई सुनिकऽ सन्तोष हसऽ लगलै आ कहलकै “एह, माय तहुँ कि नहि ....।”

एते बजीते जखन सन्तोष अपन मायके मूहँपर तकलकै त आँखिमे नोर नजड़ि परलै ताहि बातपर ध्यान बिना देनहि कहलकै- “अच्छा, माय ..... चल हमरा बड जोरसँ भुख लागिगेल अछि ।”

माय भितर जाकऽ जाबे नास्ता लबैक ताबे सन्तोष कलपर जाकऽ हाथपएर धोकऽ बैस गेल रहै । माय चुरा आ दही लऽकऽ सन्तोषके देलखिन आ ओ खायलगलै । माय सेहो सन्तोषक कातमे बैसिकऽ कहलीह “हो, तहुँ निके समयपर अएलेह..... काल्हिखन सुकराति छै...........तो एतऽ सँ परसु भोजन कैलाक वाद बहिन गाम जाकऽ नौत लेबऽ चलिजो ।” बहिनगाम जएबाक नामपर सन्तोष खुस होइय आ सोचऽ लगैय अपन ओझाक पिसियौत बहिनके बारेमे जे दुरागमनमे भेटल रहैक । ओना दुनुके टोका चाली त भेल नहिए रहैक मुदा ताकाताकी खुब भेल रहैक । ओ रहबो करै एते सून्दर जे किनका नहि एकबेर नजड़ि पड़िजाई त बेर-बेर देखऽ चाहितै ।

सुकराति बड़ निकजका मनौलनि । आ प्रातः भोजन कऽकऽ सन्तोष बहिनगाम जएवाकलेल तैयार भेला । माय एकटा चंगेरीमे किछु खजुरिया, किछु पिरुकिया, आर कि दोन कहाँ दोन धकऽ एक चंगेरी पुरा देलनि । चंगेरी उठाबके चलते सन्तोष कहैछ “एहँ माय, कि धऽ देलही.........हम ओम्हरे मिठाई ललितिऐ ।”

ई छिछ कटनाई देखिक माय कहलीह- "हमरा ई सोचिकऽ दुःख लागल ....जे सबहे सिपाहि छिछकट किया भऽजाइछ ।"

सिपाहिक बारेमे एहन वात सुनिते सन्तोष जल्दिसँ हाथमे चंगेरी उठबैत चलिदैछथि । बाटमे सैनिक बसके चेक (तलाश) करैतरहै छैक । ताही तलाशक क्रममे सन्तोषक जेबसँ एकटा बन्दुकक गोलीके खोका भेटैछनि । सन्तोषके बसमेसँ उतारिक सैनिक सब पुछताछ करऽ लेल लजाइछनि । ओमहर बसक खलासी हुनक समान निचा उतारिकऽ चलिजाइ छैक । जखन सन्तोषसँ काजक बारेमे पुछलजाइ छनि तखन हुनका अपना बारेमे कहवाक मौका भेटैछनि आ कहैछथि "हम एहि देशक सिपाहिमे असई छि........आ ई खोका त हालेमे आतंकवादीसभसँ द्वन्द भेलछल ताही वेरके छै ।" एते वात कहीकऽ ओ अपन परिचय-पत्र देखबैछथि । परिचय-पत्र देखला बाद सैनिक सब हुनका छोडैछनि । बसक समय सेहो समाप्त भऽगेल छलैक । ताहीसँ हुनका चंगेरी माथपर धऽकऽ करिब तिन कोष पएरे चलिक जाए परैछनि । अन्हरिया राति, कच्ची सडक भऽसन्तोष रातिकेँ करिब दश बजे वहिनगाम पहुँचैछथि ।

तखन धरि घरक सब लोक भोजन कऽकऽ आराममे चलि गेलरहै । मात्र ओकर बहिन आंगनमे बरतन मजैत रहै तखने ओ केवार ढकढऽकौलनि ई सुनिकऽ ओ केवार खोलऽ गेलिह । सन्तोषके देखिकऽ बहिन बड खुसी भेलीह किए त हुनको सुनऽ पड़ल रहैछनि "एक साल होबऽ लगलै आ नैहर सँ केओ नहि अएलै । "ओ पुनः भोजन बनाबऽके सुरसार जँ करऽ लगलीह त ओ बहिनके हरान कराबऽ नहि चाहलकै आ कहलकै -'भोजन कऽ लेने छी मात्र सुतऽके व्यवस्था कऽदे ।' हुनका आरामक व्यवस्था भेलनि ओ आराम करऽ गेलाह ।

भोरमे सन्तोष प्रातः काल उठिक नित्य क्रियामे चलिगेल । नित्य क्रियाक वाद जखन सन्तोष स्नान करऽलेल बाल्टीन लऽकऽ दलानबाला कलपर पहुँचैछथि त नजड़ि पड़लनि हुनक ओझाक पिसियौत बहिनपर जे कल पर कपडा खिचैत छलिह । झुलि-झुलिकऽ कपडा खिचऽके क्रममे हुनक ओढनी निचा खसिपड़ल छलनि जाहिके कारणसँ हुनक गोर आ शिकार करला तानल बन्दुक सनक स्तनपर सन्तोषक नजड़ि पड़िगेलै । ओकर नजरि ओही सुन्दर स्तनपरसँ हटिते

नहि रहैक । आ ओ कन्या विना केम्हरो तकैत मात्र अपन कपडा खिचऽ पर ध्यान देनेछलिह । कपडा धोब केँ क्रममे जखन ओ कन्या दोसर कपडा बाल्टीनमेसँ निकालऽलगलीह त सन्तोष पर नजड़ि पड़लनि । हुनका देखिते ओ जल्दीसँ अपन ओढनी सरियबैत कहलिह-"पाहुन, ...नहाय अएलीए ?" प्रश्न सुनिते सन्तोष कन्याक मुहपर तकैत घबराएल जका कहैछथि "....एह, हँ, हँ ।"

"ठिक छै पहिने अहाँ नहालिअ तखन हम कपडा खिचब ।" एते कहिक ओ आँगनदिश चलिगेलीह । सन्तोष नहेलाक वाद जखन आँगन पहुचैय त ओ कन्या सन्तोषक बहिन लग बैसल रहै । सन्तोषकेँ ओतऽ देखिकऽ ओ कन्या पुनः कपडा धोब चलिगेलीह । कन्याक गेलाबाद सन्तोष अपन बहिनसँ पुछलकै " आँइ गे बहिन ....ई के छथिन ?" बहिन हँसिकऽ जबाब दैछ " ई तोरे ओझाक पिसियौत बहिन....... कञ्चन ।" नाम सुनिक सन्तोष बजैछथि "बाह ! एकर मुहसँ सुन्दर त .....एकर नाम छैक ।"

बहिन हसऽ लगैय । सन्तोष पुनः अपना बहिनके आगंनमे देखाक कहैए "जा, अखन धरि आगंनमे अरिपन सेहो नहि देलही ।" बहिन कने खेखैनकऽ कहलिह "कनिके देर रुकिजोनऽ ....कि ?"

"हेतै !" कहिकऽ सन्तोष अशोरापर धएल कुर्शीपर बैसिजाइछथि ।

कनिए समयक वाद कञ्चन पुनः आगंनमे अबैछथि हाथमे भिजल कपडा सँ भरल बाल्टीन आ दोसर हाथमे साबुन रहैछनि । सन्तोष पुनः कञ्चनपर ताकऽ लागैछथि । मुदा कञ्चन के अपन काजसँ मतलब रहैछैक । ओ असगनि पर कपडा पसारिरहल छथि । सन्तोष विचारैत रहैछथि जे कखन कञ्जनसँ परिचय करि । ताबते एकटा बुढिया कञ्चन के अढादैछनि आगंनमे अरिपन धरऽलेल । ओ अरिपन धर लगलीह । ओना त कञ्चन सेहो सन्तोष पर तकित रहैए मुदा एहि किसिमसँ जे केओ बुझ नहि सकै ।

रातिमे भोजन करऽला कञ्चन सन्तोषके बजाबऽ दलानपर पहुचैछथि । सन्तोष दलानपर लालटेमक टिमटिमाइत इजोतमे उपन्यास पढैतरहे मुदा पएरकें पायलक आवाज सुनिते सन्तोष उपन्यास छोड़िक बाहर ताकऽलागल । आ,

कञ्चनके देखिते ओ पूनः मुरी गोतिकऽ पढऽलागल । कञ्चन नजदिक आविक कहैछथि "पाहुन............ चलु भोजन करऽ लेल ।"

उपन्यासपर तकिते सन्तोष कहैय "कनिए देर रुकुने......., कनिके बाँकी छै ।"

कञ्चन ई सुनिकऽ सन्तोषक दहिनाकात बैसजाइय । कञ्चनके वैसैत देखिकऽ ओ मोनेमोन बड खुशी होइय आ सोचैय कि आबो जरुरे बात करबाक मौका भेटत ।

कञ्चन पुनः पुछैय "अच्छा, पाहुन ....कोन उपन्यास अछि ?"

"ई सुस्मीता उपन्यास कें मैथिली अनुवाद छै ।"

ओ पुनः पुछैछथि "आहाँक नाम कि अछि,.... पाहुन ?"

"हमर नाम आहाँके बुझल होएत ।"

"नहि, कहुने ।"

"हमर नाम सन्तोष कुमार झा अछि ।"

"आ शिक्षा ?"

"छोरु, शिक्षा बड कम अछि ।"

"कहुने"

"हम स्नातक प्रथम वर्षमें नामांकन कराक छोड़िदेलहु ।"

कञ्चन फटाफट प्रश्न पुछनेजारहल अछि मुदा सन्तोष प्रश्न करऽबाक हिम्मत जुटाक व्यंग करैत पुछैछथि "ओना ....आहाँक नाम कि अछि, कञ्चनजी ?"

"हमर नाम............।" एतबे कहिते कञ्चन चुप भऽ जाइछ ।

आ दुनुगोटे हँसऽ लगैय । तखन हँसिते दूनु गोटे आंगन दिश प्रस्थान करैत अछि । सन्तोष भोजन करऽ ला बैसैय । ओत, कञ्चन, ओकर माय आ सन्तोषक दिदी सेहो बैसल रहैछथि । कञ्चनकँ माय बजैछथि "कि करबै पाहुन, ...बहिनोइ नोकरी परसँ आयल रहितनि त संगे बैसतनि मुदा...।"

सन्तोष कोनो प्रकारक प्रतिक्रिया नहि व्यक्त करैछथि आ ओ चुप चाप मुरी निहुराकऽ भोजन करैतरहै छै । ताबते बुढ़ी पुनः पुछैछनि "पाहुन, आहाँक विवाह त.......अखन नहि भेल होएत ?"

एते सुनिते सन्तोषके वाजसँ पहिनही हुनक बहिन कहैछथि "नहि त ...... मुदा आब त कर परतै .... गाँमपर माय असगर भ जाइछथि ।"

सन्तोष भोजन कऽकऽ आराम कर दलानपर चलिजाइछथि । रातिमे सन्तोषक बारेमे कञ्चनक माय सब किछु पुछैछथी मुदा ओ ई त पुछबेनहि करैछथि कि सन्तोष कोन काज करैछथि । सब किछु पुछलाक वाद बड गम्भीरता पूर्वक ओ सन्तोषक बहीनसँ कहैछथि "ए कनिया.......जौ आँहा पाहुन सँ कञ्चनियाकँ विवाह करबा दितहु त बड गुन होएत । जे जेना तिलक गनऽ परतैक हम त गनबेकरबैक ।" एमहर कञ्चन अपन विवाहक बारेमे सुनिकऽ खुशी होइय आ रातिमे सन्तोषके बारेमे सपना से हो देखलीह ।

भोरमे सन्तोष अपन गाम जाएलेल तैयार होइए मुदा हुनक बहिन एकदिन रहऽला आदर करैछनि ।" गामपर छठि सेहो अछि ।" कहिकऽ बातकँ टारैत सन्तोष अपन झोड़ा लऽकऽ निकलैय । कञ्चन हुनका अरियातऽ लेल हातसँ झोड़ा लऽकऽ आगुबढैय । दलान सँ कनिक आगु गेलाक वाद कञ्चन गम्भिरता पूर्वक सन्तोषके कहैय -"आब अपना दुनुकँ कहिया भेट होएत से ठेकान नहि अछि मुदा माय कहै छलीह जे छठिके परात त भदवा रहैछैक आ तकर बाद बाबुजी अहाँक गाम पहुँचता से ध्यान देबै ?"ऐते कहलाक बाद जे ओकरा आँखि जे कहैत रहैछै से ओकर मुह कहि नहि पबै ।

माय, ई सुनिक सन्तोष कहैय "देखु ! भगवान की कराबऽ चाहैय । तैयो ठिके छै हम प्रतिक्षा करबनि ।"

कनि आगु चलिक कञ्चन रुकलीह आ कहलीह- “आब आँहा जाउ, ...हम एतै सँ विदा होइछि ।” सन्तोष कनेक मुसैक कञ्चनके हातसँ भोरा लकऽ गम्भीर भऽ जाइछैक आ दुनु एक आपसमे आगु बढैत पाछु तकैत अपन-अपन दिशातर्फ चलिदैछ ।

कञ्चनकेँ माय जखन ओकर बाबुजीलग वियाहक चर्चा करैछथि त बाबुजी सेहो सहमति जनबै छथि । ओना हुनको इच्छा रहैछनि जे बेटीक वियाह नेपालमे करी । ओ पुरा तैयारी भऽ असगरे नेपालक सर्लाही जिल्लाक खैरवा गाम पहुँचैछथि ।

बाटमे एक आदमी माथपर धानक बोभा लऽकऽ अवैत रहैछथि । ओ आदमी आर केओ नहि सन्तोष अपने रहैए ओ सन्तोषके रोकिकऽ पुछैछथि “हे यौ भाइसाहेब .....सन्तोष भाके घर कोन थिकै ?”

सन्तोष भा हुनकापर ताकिक कहैछथि “चललजाए हमरे संग,......कनिके आगा छैक ।” दुनु गोटा चुप्पेचापे कनिक आगुतक चलैय आ पुनः कञ्चनके बाबुजी पुछैछथि “अच्छा, एकटा चिज कहल जाए ....हुनका कतेक जमिन-जत्था हैतनि ?”

“इहे करिब ३ विग्घा जते छैक ।”

कने सोचल जका करैत कहैत छथि “ऐ ... आ सन्तोष कोन काज करैय ।”

“ओ नेपालक पुलिसमें असइ छथि ।”

ओना त ओ असइके अर्थ नहि बुभलनि मुदा पुलिसक अर्थ बुभिगेलाह । आ पुलिसक नाम सुनिते ओ रुकिक कहलनि “भाई साहेब, अपने चललजाय ....हम अबैत छी ।”

माथपर धानक बोभा धएने सन्तोष इहो नहि कहऽ सकल कि सन्तोष ओहे छथि । कञ्चनके बाबूजी ओतै सँ अपन घर फिर्ता भऽ जाइछथि । गाम पहुचिकऽ निराश भ बैसिजाइछथि । कञ्चन बाबुजीके देखिक काकाक अगनासँ माय के

बजाबऽ गेलीह । माय जल्दिसँ अबिकऽ कञ्चनके बाबुजी सँ पुछैछथि “कि भेल वात पटल कि नहि ।”

ई सुनिते कञ्चनके बाबुजी आवेशमे आबिजाइछथि आ कहैछथि “जखन भोरे-भोर रेडियो खोलैछि त समाचार मे नेपालके वारेमे सब दिन एक्कहिटा वात सुनैछि फल्ना ठाम माओवादी सिपाहिके द्वन्द भेलैक । फल्ना ठाम एते सिपाहि मरिगेलैक । फल्ना ठामक चौकीमे बम फेक देलकै । मतलब अखनकँ समयमे सिपाहिके माय कखन निपुत्र भऽ जाएत सिपाहिक कनिया कखन विधवा भजाएत कोनो ठेकान नहि ।”

ओ पित्त सँ थुक घोट लगलनि, आँखिमे नोर भरि जाइछनि आ मन्द स्वरमे पुनः कहलनि -“ए, कञ्चनके माय ! एतेक सम्पत्ति अछि, एते सुन्दर बेटी, कोनो हम अपन बेटी सँ स्नेह नहि करैछी हम बेटी के निक ठाम वियाह करब मुदा नेपालक सिपाहि सँ नहि करब ।”

बाबुजीक एहन बात सुनिकऽ कञ्चन दू-तिन दिन तक खान-पिअन त्यागिक बैसिगेलीह । माय ई वात हुनक बाबुजीकेँ सुनौलीह त ओ बेटीके कतबो सम्भभौलनि मुदा बेटी त वात बुभ्बेनहि करै । ओ मात्र एते कहैछथि “प्रित त किछ नहि देखैछैक ।” ओ बड जीद करऽ लगलीह त हुनक बाबूजी पुनः सन्तोषक घर जाएवाक लेल तैयार होइछथि । ओ पुनः सन्तोषक गाम पहुँचलनि । ओ जखन सन्तोषक दलान पर पहचैछथि त सन्तोष खट्ट लऽकऽ वैललग जाइत रहथि । कञ्चनके बाबुजी हुनका कहलनि- “सुनलजाय ।”

सन्तोष हाथमे पोआर लेनहि रुकिकऽ हुनकापर ताकिकऽ कहैछथि “जी कहलजाय, ...हम कि सेवा कऽ सकैछि ?”

“अपने सन्तोषजी, छिए कि ?”

“जी ! मुदा अपने ?”

“हमर घर हाटी, हम कञ्चनके.......बाबुजी ।”

सन्तोष खह आतै छोड़िकऽ हुनक नजदिक अबैछथि आ जल्दी सँ पैर छुकऽ प्रणाम करैत हात पकरिकऽ भितर बैसाबऽ लजाइछथि । सन्तोष आँगन जाकऽ पाहुनके बारेमे अपन माय के कहैय । माय जलपान आदी बनाबमे लागिजाइछथि । माय पाहुनके लेल जखन जलपान लऽकऽ अबैछथि त जलपान खाइत ओ सन्तोषक मायके सुनाकऽ कहैछथि- “हम त सन्तोषक घटक बनिकऽ अएलहु ।”

ई वात सुनिते सन्तोषक मुरी निचा निहुरि जाइछनि आ ओ भितरे भितर एते खुस भऽ जाइछथि जैके केओ नापि नहि सकैय आ नहि त ओइके केओ लेखक लिखऽ सकैय ओ पुनः कहलाह -

“अपने सब जे किछ कहब हम दऽ देव मुदा एकटा आग्रह जे सन्तोषजी के सिपाहि क नोकरी छोड़ऽ पड़तनि बरु ओ गाममे बैसिक व्यापार आदि करौथ जे जेना करऽपरतै हम कऽ देबनि ।”

नोकरी छोड़ऽ के नाम सुनिते सन्तोष सोच लागल- “वाप रे ! जौ एहने सब व्यक्ति भऽ जाइ त देशके कि हालत हेतैक.................. कि हालत हेतै ?”

डाक्टर

एक्कहिटा गाममे सभ दिन कोनो नहि कोनो बिमारीक प्रभावसँ ग्रामबासी मरिरहल खबरि नियमित रुपमे निकालिरहल पत्रिकाक माध्यमसँ सरकार तक पहूँचैछैक । माय स्वास्थ बिभागद्वारा एकटा नव डाक्टर जे एक महिना पहिने स्वर्ण पदक प्राप्तकऽ कऽ आएल छथि, हुनके निरिक्षण आ जाँचके लेल ओहि गाममे पठाओल गेलनि ।

ठाँम-ठाँमके पुल टुटल । सड़क काटल । आ, गाछसभ काटिकऽ सड़केपर राखल होयवाक कारणसँ कोनो सवारी साधनक सुबिधा नहि रहैक । माय, करिब पन्द्र घन्टा पैदले चलिकऽ ओ ओहि गाम तक पहुँचलैथ । सभसँ पहिने त ओ रहऽके ब्यवस्था मिलौलैथ । एकटा कोठरीक ब्यवस्था भेलैक, सायद घरबला पुरे परिवार किछुए दिन पहिने मरिगेल छलैक । घरो एहन जाहिके भितरसँ दिनमे आकास आ रातिमे तारा निकसँ देखाजाइक ।

ओना त डाक्टर साहेब अपना हाथे कहियो भानस बनौने नहि रहथि माय हुनका एकटा भानस बनौनिहारक आवश्यक्ता रहैन । अशोरा पर बैसिकऽ किछु सोंचिते रहैथ कि एकटा भलादमी ओतऽदने जाइत नजड़ि परलैन । ओ, हुनका बजाकऽ पुछलखिन-“भाइ साहेब एतऽ एकटा आदमीके ब्यवस्था नहि भऽसकैय ? जे भानस बनादे आ बरतनि साफ कऽलेअ ।” अनचिन्हार आदमीके देखिकऽ ओ पुछलखिन “पहिने अहाँ ई कहुँ जे कहाँसँ अएलहुँ आ अहाँ के छी ?” हुनको पुछब उचित छलनि किया त ओ घटना अखन पुरान नहि भेल अछि । डाक्टर साहेब अपन पुरा परिचय कहलखिन तखन जाकऽ ओ सेहो अपन परिचय दैत कहलखिन-“हमर नाम रतन अछि, आ अहाँ एतऽ जे हमरा सभकलेल अएलहुँ ताहिकेलेल धन्यवाद । रहि गेल बात अहाँक लेल आदमी त हम देखैछी । ” एते कहिकऽ ओ ओतऽसँ बिदा भऽगेलथि ।

करिब एक घण्टाक बाद ओ एकटा बाह्-तेह्र बर्षक बचियाके लेनेअएलखिन । आ डाक्टर साहेबके बचियाके देखाकऽ कहलखिन-"हे ई टुगर छै, ईहे करिब एक महिना पहिने एकर माय आ बाप दूनु एकहि दिनक आगा-पाछा मरिगेलै ।" बचियाके देखिकऽ ओ सेहो चिन्तित भऽगेलखिन आ, ओकरा अपना लग राखिलेलखिन । काज सेहो बेशी करऽके नहि रहै जे कनिको दिक्कत होइतै ।

दोसर दिन डाक्टर साहेब अपन औजार लऽकऽ गाममे रोगक परिक्षण करऽलेल बिदा भेलैथ । हुनक नजड़ि जेमहर पड़ैन, एकहिटा चिज सगरो देखऽमे अबैन - गामक सभक कपड़ा मैल, अधिक्तर बच्चा सभक मुहँसँ एकहिटा बात-"गे माय भुख लागल अछि । " कतौ सुनऽमे अबै-"दादा हो दादा मरिगेली । " आदि ।

डाक्टर साहेब बिमारीके जाँचऽगेल रहथि भुख सन पैघ बिमारीक ईलाज हुनकालग नहि रहैन -जे गामक प्रमुख समस्या रहै । जतऽ डाक्टरसाहेब ठाह्र भऽजाथिन त लगै जेना कौआ सभक बिचमे बकुला । गाम भरिमे एकहिटा हुनके कपड़ा साफ छलनि, मुदा कते दिन ? एकटा बात त निश्चित छलै जे ई गामक एहन दशा गरिबीक कारणे भेल छल । ताँहूमे किछुलोक ओकर गरिबीक नाजाएज फाएदा लेबऽचाहै ।

गाममे घर-घर जाकऽ ईलाज करऽके क्रममे एकबेर जखन ओ बाटपर चलैत रहैथ त अबाज अएलै-"माय गे मरिगेली .....। " बड जोरसँ ओ अबाज जे अएले सें सोचियोकऽ डर लागिसकैय । डाक्टर अबाज आएल दिश दौड़ला । घरमे पैसिकऽ देखलखिन त एकटा बाह्-तेह्र कर्षक बच्चा पेट पकरिकऽ कनैत रहै । ओ एमहर-ओमहर सगरो तकलखिन मुदा शियान ओतऽ केओ नहि रहै । ताबते मधिम-मधिम खोकीके अबाज सुनाय पड़लै । ई सुनिकऽ ओ अबाज लगौलखिन "घरमे के छी ?" केश बगराके खोता सन रखने एकटा बुढ़िया अएलै त डाक्टर साहेब एकटा गिलासमे पानि लाबिदेबऽलेल कहलखिन । बुढ़िया पानि लाबिकऽ देलकै । एकटा गोटी ओहि बच्चाके ओहि पानि संगे खुवेलखिन । पाँच-सात मिनटके बाद ओ ठिक भऽगेलै । फेर ओतऽसँ ओ बिदा भेला । साँझमे ओ जखन अपन घर पहुँचलखिन त ओ टुगरी बड़ सुनरि भानस बनाकऽ धएने रहै । ओ हाथ-पएर धोकऽ भोजन करऽ लेल बैसिगेलखिन । ओ

चिन्तिते अवस्थामे भोजन कऽकऽ आराम करऽ गेलखिन । हुनका निने नहि परैन । दिनमे जाँच कएल बिमारीसभ हुनक नजरिके सामने घुमैत रहैन । आ, एकहि दिनमे एकहि परिवारक चारि-चारिगोटेके मृत्यु । ओ एहि बिमारीसभक बारेके सोंचऽलगलखिन ।

बिमारी किछु नव किशिमक भेटल रहैक । किछु जल्दिसँ करऽके अवस्था नहि रहैक किया त ओहि गामसँ शहर धरि पहुँचऽलेल कमसँ कम पन्द्र घण्टा चलऽपरै । ओतऽ नहि त प्याथोलोजिक समानरहै जे किछु जाँच कएल जएतै । बिमारीसभक बारेमे सोचैत-सोचैत, ओतै बोरा पर सुतल ओहि बचियासँ पुछलखिन-"बौआ, नाम कि छो तोहर ? " ओकरो निन त नहिए पड़ैत रहै, ते ओ उठिकऽ बैसिगेली आ जबाब देली -"जी हमर नाम सेहन्ता अछि । " ओ फेर पुछलखिन-" तोहर माय-बाबुके कि होइत छलौ ? " सेहन्ता हुनका पएरलग जाकऽ बैसिगेली आ गम्भिर भऽ कहऽलगली-" किछो नहि ......, करिब डेढ़ दू महिना पहिने बहुते लोक सभ बन्दुक लऽकऽ अएलै आ सभके घरे-घर लोकसभके कहै काज करऽ जाएला ।.....जे नइ जाइ ओकरा धमकी दै जे नहि जएतै ओ घिसरी काटिकऽ मरतै । ....बहुतो लोक त ओकरा सभसंगे चलिगेलै मुदा किछु लोक जाएके लेल तैयार नहि भेलै । सभगोटेके चलिगेलाक बाद एकटा आदमी एकटा बम फेकलकै जाहिके आबाजसँ बहुते घर टुटिगेलै आ छ-सात दिन धरि अन्हारे रहै । एतऽके लोक सभके श्वासलेबऽमे सेहो दिक्कत होइ । एतऽ एकहिटा ईनार छै जतऽके पानि सभ पिबैछै ओहूमे किछु खसादेलकै । ....एतऽ पानिके लेल आओर ब्यवस्था नहि छैक । " एते बात कहिकऽ ओ बच्चा लगलै डाक्टर बाबुके पएर जाँतऽ ।

पएर जाँतब देखकऽ ओ सेहो उठिकऽ बैसिगेलाह आ कहलखिन " जो तहूँ सुतऽ । " ओ बच्चा फेर ओहि बोरापर सुतऽ चलिगेली । भोरमे सबेरे उठिकऽ एकटा आदमीके चिठ्ठी दऽकऽ स्वास्थ मन्त्रालय पठौलखिन । आ संगहि किछु दबाई आ गैससभ सेहो पठादेबऽलेल ओहि चिठ्ठीमे लिखलनि । ओकरा बिदा कएला बाद हुनका जे किछु टोल छुटिगेल छलनि ओमहर बिदा भेला ।

साँझमे जखन ओ सूचि उल्टाकऽ देखलनि त किछु बच्चा मात्र एहन छलै जेकरा कोनो प्रकारक रोग नहि लागल छलैक । आ, एकटा बात निश्चित रहै

जे रोगीसभ मरबेटा करतै आओर कोनो उपाय नहि रहै। रोगीक श्वाससँ फैल्ऽवाला रोगक नियंत्रन बड़ कठिन माय ओकरा सभके मरनाइए उचित बुझि ओ अपन झोरासँ बिषक सूइ निकाललैथ। आ, पहिने तैयार कएल सूचिके देखिकऽ फेर एकटा नव सूचि तैयार कएलनि जे केकरा -केकरा बिषक सुई देबाक अछि।

प्रात: फेर ओ आओर दिन जकाँ बिमारीक देखभाल करऽ बिदाभेलखिन। मुदा ओइ दिन हुनका छटपटाति मुर्दाके मुक्ति देबऽके छलनि। आ, साँझ धरि ओ करिब अस्सिगोटेके मुक्ति दऽदेलखिन।

साँझखन जखन ओ निबासस्थान फिर्ता अएलथि त सेहन्ता भोजन बनाकऽ हुनके बाट तकैत छली। ओ झटसँ झोरा धऽकऽ हाथ पएर धोकऽ भोजन करऽलेल बैसिगेलखिन। सेहन्ता भोजन लाबिकऽ देलकै मुदा भोजन करऽसँ पहिने हुनका उल्टी होबऽलगलनि। पेट-माथ सभमे दर्द सेहो होबऽलगलनि। ओना हुनको ओहे बिमारीक लक्षण छलनि मुदा ओ अपनेसँ बिषक सूइ त नहि न लऽसकैछलथि।

राति भरि दर्दसँ छटपटाति, बोकरैत। मात्र तिन पहरके राति कतेको बर्ष जका अनुभव होइ। भोरमे करिब नौ बजे बहुते डाक्टर, नर्स आ पुलिससभ सेहो अएलै। डाक्टर आ नर्ससभ पहिने ***डाक्टर मुरली प्रसाद शर्मा***के देखभाल कएलखिन। हुनका निशाक सूइ दऽकऽ मात्र आराम भेटलनि।

दोसर दिश पुलिससभके गाममे ई समाचार भेटलनि जे डाक्टरसाहेब काल्हिखन जिनका-जिनका सूइ देलखिन ओ सभ मरिगेलै। माय पुलिससभ हुनकासँ पुछ्‌अएलै कि एते लोक एकहिबेरमे केना मरिगेलै। ओ निसंकोच अपन समस्या कहिकऽ कहलखिन-"............माय हम काल्हिखन अस्सिगोटेके बिषक सूइ दऽदेलीऐ। "

एमहर सेहन्ता डाक्टरबाबुके रातिभरि सेवामे लागलछली। आ, भोरमे जखन ओ पुरा ओछायनपरके बोकरल साफ कऽकऽ बैसली तखने एकटा पुलिस डाक्टरबाबुके कहलकनि-"हम अहाँके हपन हुकुमतमे लैछी। " ई बात सुनिकऽ ओ जबाब देलखिन-"जँ अहाँके उचित लगैय त हम तैयारछी। ओ फेर कहलखिन - "अपन आवलोकन सभगोटेके समझादैछी आ एकटा बात आओर

किछु बच्चा छै जेकरा कोनो रोग नहिछैक ते ओकरा सभके सेहो लऽचलऽके ब्यवस्था सेहो करु। " सूचिअनुसार रोग नहि लागल बच्चासभके लेबऽ किछु पुलिससभ गेल। आ एमहर डाक्टर बाबु लगलखिन सभके अपन आबलोकन सम्झाबऽ। ओमहरसँ जखन ओसभ निरोग बच्चासभके लऽकऽ आबिगेलखिन तखन धरि हिनको काज समाप्त भऽगेल छलनि। तखन ओ कहलखिन -"आब चलि सकैछी। "

दशगोटे पुलिस, बच्चासभ आ डाक्टरसाहेब ओतऽसँ बिदा भेलथि। थाकल बच्चासभके पुलिससभसेहो कोरामे उठाकऽ शहर तक पहुचौलैथ। रातिके दश बाजिगेल छलै माय बच्चासभ संगे डाक्टरबाबुके सेहो थानामे राखऽके ब्यब्स्था कएलगेलै। डाक्टरबाबु त गल्ति बड नमहर कएनेछलाह किया त जियाबऽ लेल पठाओलगेल छलनि मुदा ओ ...., माय हुनका भोरमे अदालत मे उपस्थित कराओल गेलनि।

अदालतमे हुनकासँ पुछलगेलनि -"डा. मुरली प्रसाद शर्मा, अहाँ एना किए कैलीऐ ? " ओ किछु देर चुप भेलखिन तखन फेर जबाब दैत कहलखिन-"आइ तक हमर एस.एल.सी.के रेकर्ड केओ नहि तोरऽसकल अछि। तइयो बाबुजीके बड मेहनति करऽ परलनि हमर रुशमे एम.बि.बि.एसके लेल। आइ.एससी सँ एम.डी धरि टौप कऽकऽ पि.एचडी.मे स्वर्णपदकसँ विश्वबिद्यालय सम्मान कएने रहे। बहुतो अस्पतालसँ प्रस्ताव सेहो आएल मुदा हमर सोंच ई छल जे हमरा सनके डाक्टरके हमरा देशमे आवश्यक्ता अछि। सायद माय हमरा अबिते ओतऽ पठादेलगेल जतऽ पन्द्र घण्टा चलिकऽ पहुचऽपरैछैक। ......हम ओतऽ गेलहुँ ईलाज करऽ, ठिक छै, ईलाज कऽदेबै, मुदा जतऽ खाएके लेल रोटीयो नहि छैक ओतऽ दबाइ कतऽसँ अएतै। ......सरकारके सुरक्षामे खर्च करऽसँ फुरसते नहिछै आ, दबाइ त दूर जाउक .... ओकरासभके एहन रोग छै जे एकटासँ दोसरके आ दोसरसँ तेसरके होइतजएतै। आ, धिरे-धिरे ओइ श्म्सानमे के बाँकि रहत......? "

एते सुनिलेलाक बाद, न्यायधिस डाक्टरके प्रमाण-पत्र रद्द कऽदेबऽके फैसला सुनौलखिन। न्यायधिसक फैसला सुनिते हुनका मुँहसँ गाउज निकलऽलगलनि। ओ बेहोस भऽ खसिपरला। जाबे लोक दौड़े- दौड़े ताबे ओ ई देश नहि दुनियासँ बिदा भऽगेलाह।

भाग्य अप्पन–अप्पन

एक बेर देशमे के की-की क\ऽक\ऽ जीवन यापन क\ऽरहल अछि ताहि बातक पत्ता लगाब\ऽलेल राजासाहेब अप्पन राजकुमारके देशमे सर्वेक्षण कर\ऽलेल पठौलनि । देशमे के केहन प्रकारक रोजगार क\ऽक\ऽ अप्पन जीवनयापन करैत अछि, से विषयक सर्वेक्षणमे राजकुमार सबहक आङन जा-जाक\ऽ प्रजासबहक रोजगारक बारेमे सर्वेक्षणक श्रीगणेश कएलनि ।

सर्वेक्षणक क्रममे जखन ओ एकटा आङन पहुँचलनि त देखलखिन दू भाइमे झगडा होइतछल । जाहिमेसँ एकटा भाइ जे जेठ छल ओ रहैथ केश कटौने जेना किनको स्वर्गबास भ\ऽगेल छलैन । आ, दोसर भाइ जे छोट छलैथ ओ लाल धोती पहिरने छलाह जे देखिक\ऽ लगै नव बियौहती बर । राजकुमार ई देखिक\ऽ हरान भ\ऽगलैथ जे एकहि आङनमे एना किए छै ? आङनमे ओ दूनु राजकुमारके देखियोक\ऽ चुप नहि भेल । हँ, स्वभाविक छै, कहाँदोन पित्तमे लोक आन्हर भ\ऽजाइछ । राजकुमार लगलैथ दूनुमे भ\ऽरहल बातचित सुन\ऽ । बड़का भाइ बेर-बेर कहै –'रे तोरा लेल हम नौह-केश करालेली..हमरालेल तो मरिगेले ।' एहन किसीमके बात सुनिक\ऽ हुनको बरदास नहि भेलनि माय ओ जोरसँ कहलैथ-'अहाँसब चुप होएब कि जेल अखने पठादिअ ।'बास्तवमे लोक कहैछै -'माइरके डरसँ भुत पराए', ठिक ओहने भेलै । दूनु भाइ चुप भगेल तखन राजकुमार छोटका भाइसँ पुछलखिन -'अहाँ कहु अहाँ एहन कोन गलती कएलहुँ जे घरमे एहन कल्लह भ\ऽरहल अछि ? कि अहाँके एते बुझल नहि अछि जे कलहके कारणसँ घरक सब किछु कमजोर भ\ऽजाइछ ?' राजकुमारक प्रश्न सुनिक\ऽ बड़ विनम्र भ\ऽओ जवाब देलनि -'हम आठ बर्ष पहिनेसँ जाँहि लड़कीसँ प्रेम करैछलहूँ ओकरेसँ हम बियाह कएलहूँ अछि। ताहिलेल ओ हमरा पर खिसियाएल छथि ।...हुनका तिलकके माध्यमसँ आब\ऽवाला आम्दनी नहि भेटलनि ते ओ बिभिन्न बहन्ना बनाक\ऽ हमरासँ झगडा क\ऽरहल छथि ।'

भाइके मुँहसँ एहन बात सूनिक\ऽ ओ पिताक\ऽ कहलैथ -'बियाहमे सबसँ पहिने देखलजाइछ लड़कीक खन्दान, जाति आदि ।' जातिके नाम सुनिते छोटका भाइ कहलकै -'हम जातिके बाह्मण होइतो जँ चौकपर जाक\ऽ जुत्ता सियब त लोक हमरा चमार कहत, अर्थात मतलव साफ छै आदमी अप्पन कर्मसँ नमहर आ छोट होइछ ,... किनको माथपर नहि लिखल रहैछनि कि ओ कोन जाति छथि ।....रैहगेल खन्दानक बात त थाल आ कमलके फूलवाला कहाबत अहाँ पक्का सुनने हाएब ठिक तहिना जँ हम बाहरमे कतौ फेकल पथ्थरपर भगवानक मूर्ति गढ़िक मन्दिरमे राखि दिऐ त लोक ई नहि पुछ अएतै जे ई पथ्थर कत\ऽके छै ओ सिधा पूजा करतै ......लोक डुबैत सूरजके एकहि दिन प्रनाम करैछैक मुदा उगैत सूरजके सब दिन ।' एते बातक बादो जेठ भाई फेर कहलखिन -'रे, कमसे कम ओकर संस्कृती पर त बिचार कर\ऽके चाही ।' संस्कृतीक नाम सुनिते छोटका भाइ हसिक\ऽ बाजल -'महाभारतमे भिम सेहो एकटा राक्षसनीसँ बियाह कएलकै जेकर पुत्र घटोत्कच छलैक ।....आप करे त रास लिला आ हम करे त कैरेक्टर ढिला, नहि ।' फेर ओ शान्त भ\ऽक\ऽ कहलखिन-'देखु भैया, बियाह आदमीक सोचला आ कएलासँ नहि होइछ ...ई त भाग्यक खेल थिक ।'

दूनु भाइमे भ\ऽरहल बातचित सुनिक\ऽ राजकुमारके सेहो किछु नहि फुराति छलैन । उदाहरण एकहुटा काट\ऽवाला नहि रहैक । ते ओ बिचमे किछु बाज\ऽ सेहो नहि चाहलखिन । ते ओ हुनकासभसँ बिनाकिछु पुछने -'अहाँसभ झगड़ा नहि करु' कैहक\ऽ बिदा भ\ऽगेलैथ ।

राजकुमार ओत\ऽसँ कनिके आगु बढ़लैथ त देखलखिन एकटा बोर्डपर लिखल रहै "भविश्यवाणी" । बहूतो लोकसभक ओत\ऽ भिड़ लागल रहै । लोक सबहक भिड़भाड़ देखिक\ऽ ओ आर्श्यमे परिगेलैथ । केओ अनाज, केओ किछु- केओ किछु केओ रुपैया द\ऽक\ऽ भविश्यवाणी सुन\ऽ आएल रहे । राजकुमार पण्डितजी लग जाक\ऽ पहिने ओ अप्पन सर्वेक्षणक सम्बन्धमे आय-व्यय सभ किछु पुछिलेलाक बाद ओ भविश्यवाणीक सम्बन्धमे सेहो किछु पुछलखिन किए त हुनका दिमाग पर नचैत छलैन एकहिटा बात जे ओत\ऽ छोटका भाइ बाजल छल -' बियाह आदमीक सोचला आ कएलासँ नहि होइछ ...ई त भाग्यक खेल थिक ।'

राजकुमार अप्पन बिवाहक सम्बन्धमे पण्डितजीसँ पुछलखिन कहु -'हमर बियाह केकरासँ कोन जातिमे होएत ?' पण्डितजी हुनक माथक रेखा देखिकऽ पहिनही बुझिगेल छलैथ कि ओ एहि देशक भावी राजा छथि । मुदा बियाहक सम्बन्धमे ओ देखलथिन त हुनका भेटलनि कि हुनक बियाह ओही गाँमक चमनिके संग । पण्डितजी राजकुमारसँ कहलखिन-'अहाँक बियाह एहि गाँमक चमनिसङ होएत ।' ई बात सुनिते राजकुमार पितागेलैथ आ पुछलखिन -'जँ नहि भेलै त ?' राजकुमारक प्रश्नके ओ हसैत उत्तर देलैथ-'जँ नहि भेल त अहाँ हमरा जे कहब मानिजाएब ।' राजकुमार सर्वेक्षणक काज छोड़िकऽ दरवार फिर्ता भऽ चिन्तीत भऽ अप्पन कक्षमे जाकऽ सुतिरहलैथ ।

देशक प्रधान सेनापत्ति राजकुमारक एकटा बहुत निक मित सेहो छलखिन । राजकुमारके चिन्तीत मुद्रामे देखि ओ हुनकाँसँ पुछलखिन -'मित, अहाँके कि भेल, अहाँ एना चिन्तीत किए छी ?' राजकुमार सेनापत्तिलग अप्पन मनक बात पूर्ण रुपसँ निकजकाँ सम्पूर्ण घटना सुनौलखिन । ओहि गाममे एकहि घर चमनि होबऽके कारणसँ सेनापत्तिके ओकरा सबहक बारेमे सेहो निकजकाँ बुझलरहे । सेनापत्ति अप्पन बिचार प्रस्तुत कएलानि -'चमनिके एकहिटा जे बेटी छैक ओकरा मारिकऽ नदिमे फेक देल जाए ।

राजकुमारक आज्ञा अनुसार सेनापत्ति अप्पन किछु सेनासहित जाकऽ ओइ लड़कीके जंगल दिश लगेल । बिच जंगलमे जे एकटा नदि परै ओतै ओकरा लऽजाकऽ एकटा सेना ओकरा पाछुसँ एक तलवार मारिदेलकै । ओ लड़की ओतै बेहोस भऽगलै । मरलसन देखिकऽ ओकरासभके भेलै जे ओ लड़की मरिगेल ते ओकरा नदिमे फेककऽ सेनासभ अप्पन देश फिर्ता चलिआएल ।

ओ लड़की दहाकऽ एकटा दोसर राज्यमे पहुचगेल । नदिक किनारके ओहि देशक राजा रहैथ स्नान करैत तखने हुनका ओ बेहोस लड़कीपर नजड़ि पड़लनि । राजा अपनेसँ जाकऽ ओ लड़कीके कोरामे उठाकऽ लैलथि । श्वास त ओकर चलिते रहै ते राजा अप्पन दरवार लऽजाकऽ ओकर ईलाज राजबैद्यसँ करौलनि । राजाके अप्पन कोनो सन्तान नहि होबऽके कारण राजा ओइ लड़कीके अप्पन राजकुमारी घोषणा कएलनि । किछु समयक बाद राजकुमारीके बियाहक प्रशंगमे राजा एकटा सभाक आयोजना कएलनि । आ, आहि सभामे बिभिन्न राज्यक राजा तथा राजकुमारसभके आमन्त्रित सेहो ।

शभामे उपस्थित राजा-महाराजा लग घोषणा कएलगेल -'राजकुमारीके जे लड़िका पसन्द एतै, ओ ओहि लड़काके वरमाला पहिरादेत आ ओहि लड़कासँ राजकुमारीक बियाह सेहो कएलजाएत । घोषणा पश्चात राजकुमारी शभामे वरमाला लऽकऽ उपस्थित भेली । राजकुमारी कोनो स्वर्ग परीसँ कमजोर नहि बुझाई । राजकुमारीके देखिकऽ सबहक मोनमे रहे -'हम राजकुमारीसँ बियाह करितहुँ ।' ओ चारु दिश घुमिकऽ ओही राजकुमारक गरदनिमे माला पहिरादेली । राजकुमार सेहो बड़ खुस भेल किए त हुनका भविश्यवाणी कैनिहार पण्डितके जबाव देबऽके छलनि ।

बियाह भेलनि । राजकुमार राजकुमारीके लऽकऽ अप्पन राज्य अएलनि । बियाहक सब बिध समाप्त भेलाक बाद ओ अप्पन सेनापत्तिके बजाकऽ ओ भविश्यवाणी कैनिहार पण्डितसँ भेटवाक इच्छा प्रगट कएलनि । मित तथा राजकुमारक इच्छा अनुसार ओइ पण्डितके राजकक्षमे उपस्थित कराओल गेल । राजकुमार आदेश देलनि -'ई पण्डित दोसरके मात्र ठकैय । भविश्यवाणीक नाम पर सभके धोखा दैय ते एकरा सजाय मृत्यु देल जाए ।...... जँ हिनका अप्पन सफाइके लेल किछु कहऽके छनि त कैह सकैछथि ।' राजकुमारक बात सुनिकऽ ओ कहलखिन-'राजा साहेब आइ तक किनको हम नहि ठकलीयनि । रहल बात अपनेके त अपने जाकऽ ई देखलजाए कि अपनेक रानीक गरदनिके पाछु कातसँ अपनेक सेनापत्ति द्वारा मारलगेल तलबारक निसान अछि कि नहि ।' ई बात सुनिक राजकक्षमे रानीके सेहो उपस्थित कराओलगेल आ ओतै सभक सामनेमे जखन ओ माथ परसँ नुवा हटाकऽ पाछुतकलखिन त बास्तवके तलबारक निसानी रहबे करै । सभगोटेके छक्क पड़ैत देखिकऽ पण्डितजी कहलनि-'होइहे वही जो राम रचि राखा ....।'

दाग

अरुण भोरमे घरसँ निकलऽ बेरमे ताला लगाकऽ निकलल छलाह । मुदा साँझखन जखन ओ घर पहुचलाह त केवार मात्रे सटाएल रहै । तालाके त अत्ते-पत्ते नहि । बुझऽमे अएलनि जे घरमे पक्का चोरी भऽगेल । ओ धरफऽराति बौल बारलनि । आ, ईजोत होइते घरमे रानीके देखिकऽ ओ अकबका गेलाह । सोफालग निच्चामे ओ बैसल छलिह । आ अबाक होबऽके त बाते रहै जे कनिए दिन पहिने रानी दोसरासंग भागिगेल छलिह । मुदा, ओ पहिनेके तुलनामे बहुत बदलल बुझाइत छलिह । एते लटल छलिह जे लगै मात्र देहमे हडडी । अरुणके बाजके मोन त नहि रहै किए त बियाह कएला दूइयो बर्ष नहि भेल रहै आ दोसर संगे ...... । ओ अरुणके देखते किछु बजली मुदा हुनका बुझऽमे नहि अएलनि । ओ नजदिक जाकऽ बैसिगेलाह आ पुछलखिन -'कि भेल अहाँके ?'

अरुणक प्रश्नके बिना कोनो जबाब देने ओ कहलीह -'हम भागिकऽ अएलीए ।'

तैयो अरुण किछु नहि बुझल जकाँ ओ ओकर आओर लग घुसकिकऽ ओकरे दिश ताकय लागल । रानीके लगमे बसिते ओकरा पुरान बातसभ मोन परऽलगलै; रानी, जे पहिलबेर कैम्पसक पहिल सांस्कृतीक कार्यक्रममे भेटल छलीह । निक कलाकार होबऽके कारणसँ रानी अरुणसँ परिचय करऽगेलीह । परिचय भेलै । आ, साथमे आओर किछु बात सभ । आ एतहि दूनुके एक-दोसरसँ मुक प्रेम भऽगेलनि । ताहिके बाद दूनु कहियो कतौ त कहियो कतौ भेटऽके सिलसीला जारी राखऽलागल । एहिके बारेमे किनको किछु बुझल नहि छलनि । एहि क्रममे अरुण रानीसँ बियाहक प्रस्ताव आगु बढ़ौलनि । आ, रानीक सहमति पाबि ओसभ भागिकऽ बियाह कएलाह । एहि बियाहके ओना रानीक जातिके लोक बिरोध आ अरुणक जातिक लोक स्वागत कएने रहै । आ, दूइए बर्षक बाद ई .... दोसर संगे ।

जेकरासंगे ओ चलिगेलछली अरुणके बुझल नहि छलनि जे ओ के छैक । किए त अरुण एकटा कुशल कलाकार होबऽके कारणसँ बहुतो लोकके हुनका आंगनसँ आबाजाही लागल रहैछलनि । ओना त ओ रानीके गेलाक बाद ओ बहुत दिन धरि गुमसुम रहय लगलाह । मुदा एखनि ओ अप्पन मोनके बुझालेने छलाह । गाम आ टोलक लोकसभ कहैछलै -

'केहन छै , लाजो नहि । बहुभागिगेलै ...... ।'

मुदा समाजमे एहन घटना घटब त आम बात भऽगेल छैक । एकटा अकल्पनीय घटनाके प्रश्नवाचक दृष्टीसँ देखते रहैथ ताबते ओ बजलीह-

'हम अहाँसँ मात्र भेट करऽ आएलछी .... एगारहे बजे अएली मुदा अहुँ नोकरी करऽलगलीए से मालुम भेल । ...... एखनो धरि अहाँ हमरालेल चिन्ता लैतरहैछी से बात सिरसियावाली काकी कहैछलखिन । ....कि आब अहूँ बियाह कऽलेब त नहि होएत .... आ नोकरीवालाके बियाह होनाइ सेहो कठिन नहि ।'

मुदा अरुण हुनक प्रश्नक कोनो जवाफ बिना देने पुछलखिन -

'अहाँ एतऽ कि करऽ अएली ?'

अरुणक एहि प्रश्नक जवाफमे ओ कहली -

'हम बिमार भऽगेली ...... दिनानुदिन कमजोर भऽरहलछी .... जखन-तखन माथ दुखाइत रहैय .... घुरमी लागल जकाँ बुझाइतरहैय । .... हम ओ छठठूकसंग जाकऽ बड नमहर पाप कएली आ पापक परिणाम कतहूँ निक नहि होइछैक । हमरा ओ ठगिलेलक, अरुण ?'

एते सुनलाक बाद अरुण पुछलखिन- 'किए ? आब कि भेल ?'

बड गम्भिर भऽकऽ रानी जबाब देली- 'हमरा ओ कहने रहे घरमे असगरे छी, एकटा माय मात्र छथि, नमहर घर अछि .. अन्न किनऽनहि परैए । मुदा सब झूठ छै । .... एक्कहूटा बात साँच नहि ।'

एते बजलाके बाद ओकरा आखिमेसँ नोर खसऽलगलै आ आवाज सेहो थरथराए लगलै। ओकर बातक बिना कोनो प्रतिक्रिया देनहि ओ पुछलाह -'आब कि समस्या अछि ?'

ओ फेर कहली - 'ओ कहैए हमरो होटलमे गीत गाबऽपरत .... नहि त ओना पालऽ नहि सकत। नमहर शहरमे एसगर कमाकऽ पेट नहि भरैछैक कहाँदोन। .....हम कि करु ?'

एते बजला बाद ओ भोकासी पारिकऽ कानऽ लगलीह। अरुण बिना कोनो प्रतिकृयाके पुछैछथि- 'ओ अपने कि करैए ?'

'ओ अपने होटलमे डान्स करैए।'

आँखिसँ खसल नोरके आँचरसँ पोछैत ओ अरुण दिश ताकऽ लागलीह मुदा हुनका सहजहि किछुनहि फुरैलनि तथापि ओ रानीके धैर्यता धारण करबाक अश्वासन दैत कहलनि -'जे भेलै भऽ गेलै मुदा अहाँके बिना सोंच बिचार कएने ओना भागऽके नहि चाही। आब अहाँ कि चाहैछी, कहू।'

'हमर जीनगी बरवाद भऽगेल, ... हम कतऽ जाउ, ... फाँसी लगाकऽ मरियो नहि सकैछी।' हुनक नोरक गंगा बहिरहल छलनि कनिक देर चुप भऽ ओ फेर बजलीह- हम बहुते पैघ गलती कऽलेली, आब हम जीबियोकऽ कि करब। आ हमरासन रोगीके केओ नोकरनीमे सेहो नहि रखतै .... हम कि करु ..... ?' एते कहिकऽ ओ भोकासी पारिकऽ कान लगलीह।

अरुणलग कोनो प्रकारक जबाब नहि छलनि तैयो ओ रानी दिश तकैत बजलाह -'किछु नहि भेलैए, ... अहाँ किछु दिन अप्पन माय-बाबुजीलग जाक रहु। आ, बितल समयके बिसरऽके कोशिस करु। आ, ओही लफंगासँ नहि डेराउ।'

'केना जाउ नैहर, माय-बाबुजीके कोन मूहँ देखबियनि ...... हमरा सहास नहि अछि .... ओतहूसँ सेहो हम भागिएकऽ आएल रही। .... आ अहाँसंगे भागऽसं पहिनहि ई सोचिलेने रही जे मरिजाएब मुदा माय-बाबुजी लग हारिकऽ नहि जाएब। ..... सच त ई छैक जे हमरा अहाँसँ सेहो क्षमा मागऽके छल .... किए त हमरा बड़ निक जकाँ बुझल अछि जे हमरा चलते अहाँके प्रतिष्ठापर पड़ल। .... तैयो हम अहाँक समक्ष आबऽके सहास कैली। ...... माय बाबूजी त हमरासँ तहिए हाथ धो लेलखिन जहिया हम अहाँसंगे बियाह कएली। .... सहेलीसभ कहैत रहे जे जहिना सुनलखिन हमर बियाहक बात तखने केश कटालेलखिन आ कहलखिन- जो बेटीके नामके नौहकेश करालेली। .... अहाँ सेहो हमरासँ मन मारिलेने होएब।' एते कहऽ धरि रानी मात्र हिचैक रहल छली सायद नोर सुखागेल छलैक।

अरुण उदास भऽ कह लगलखिन- 'हम कि करी... हमरा त अहाँके देखिकऽ आओर दुख लागि रहल अछि। बल्कि जा धरि अहाँके नहि देखने रही ता धरि मन शान्त छल, बिसरऽके प्रयास करैत छलीए।' किछु देर चुप्प भऽ ओ फेर कहलखिन - 'अहाँके कि भेल अछि ? .... अहाँ हमरासँ कि चाहैछी ?.... अहाँके मुँह देखिकऽ हमरा डर लागिरहल अछि। दबाईबिरो सेहो नहिए करौने होएब ? ...... मुदा अहाँक एहन हालत देखिकऽ ओ कि कहैए..................'

अरुणक बात बिचेमे कटैत ओ सिसकैत बजलीह- 'आब हमरा ईलाज कराबऽके नहि अछि। अहाँसँ भेटलाक बाद माय-बाबुजीसँ भेटवाक चाहना पुरा भऽगेल।' एते कहि ओ उठिकऽ केवार दिश आगु बढ़लीह।

केवारलग पहुचते काल अरुण उठैत बैसऽलेल कहलखिन - 'रानी, बैसु ने।' मुदा एते कहवासँ पहिने बिना किछु बजने ओ केवारसँ बाहर भऽगेल छलीह।

बाहर अन्हार रहै। 'आब ई नौ बजे कतऽ जाएब ? रुकु। .... हमहु अबैछी ... रुकु।' एते कहिते ओ जुत्ता पहिरऽलागल। आ जखन बाहर निकलल त रानी केम्हरो नजरि नहि परलनि। अन्हार सड़क पर ओ पूर्ब गेली वा पच्छिम देखऽमे नहि अबनि। ओ किछु आगु पाछु देखलखिन आ जखन भेट नहि भेलनि त फेर घरमे फिर्ता आबिगेलाह।

किछु दिन बाद केओ कहलकनि जे रानी आत्महत्या कऽलेलीह। ई सुनिकऽ अरुणक पैरतरसँ जमिन निकलिगेलनि। शायद मुत्युसँ दाग धुवागेल होए मुदा किछु कऽसकैछलीह।